ISSN-0971-8397

योजना

मई 2024

विकास को समर्पित मासिक

भारत का ताना-बाना

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

अब
उपलब्ध

करियर की चिंताओं को दीजिये विराम एक किताब में पाएं अनेक समाधान

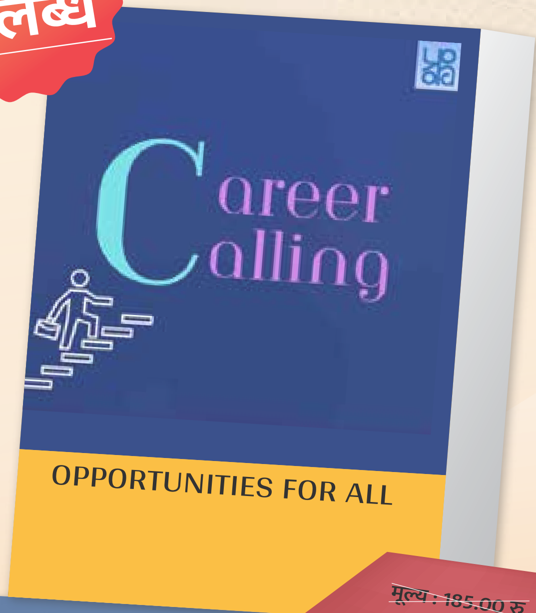

~~मूल्य : 185.00 रु.~~
विशेष मूल्य 166.50 रु.

यहां उपलब्ध

www.publicationsdivision.nic.in

पुस्तक दीर्घा
सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003

www.amazon.in

इस पुस्तक के विषय में किसी व्यापार सम्बन्धी जिज्ञासा के लिए संपर्क करें :
फोन : 011 24365609 | ईमेल : businesswng@gmail.com

@publicationsdivision | @Employ_News | @DPD_India | @dpd_india

ISSN-0971-8397
योजना
वर्ष : 68
अंक : 05
मई 2024
वैशाख-ज्येष्ठ, शक संवत् 1946
पृष्ठ : 52

प्रधान संपादक
कुलश्रेष्ठ कमल
संपादक
डॉ ममता रानी
संयुक्त निदेशक (उत्पादन)
डी के सी हृदयनाथ
आवरण : बिन्दु वर्मा

संपादकीय कार्यालय
648, सूचना भवन, सीजीओ परिसर,
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
ईमेल: yojanahindi@gmail.com

योजना का लक्ष्य देश के आर्थिक विकास से सम्बन्धित मुद्दों का सरकारी नीतियों के व्यापक संदर्भ में गहराई से विश्लेषण कर इन पर विमर्श के लिए एक जीवंत मंच उपलब्ध कराना है।

योजना में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। ज़रूरी नहीं कि ये लेखक भारत सरकार के जिन मंत्रालयों, विभागों अथवा संगठनों से संबद्ध हैं, उनका भी यही दृष्टिकोण हो।

योजना में प्रकाशित विज्ञापनों की विषयवस्तु के लिए योजना उत्तरदायी नहीं हैं।

योजना में प्रकाशित आलेखों में प्रयुक्त मानचित्र व प्रतीक आधिकारिक नहीं है, बल्कि सांकेतिक हैं। ये मानचित्र या प्रतीक किसी भी देश का आधिकारिक प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

योजना लेखकों द्वारा आलेखों के साथ अपने विश्वसनीय स्रोतों से एकत्र कर उपलब्ध कराए गए आंकड़ों/तालिकाओं/इन्फोग्राफिक्स के सम्बन्ध में उत्तरदायी नहीं है। योजना किसी भी लेख में केस स्टडी के रूप में प्रस्तुत किसी भी ब्रांड या निजी संस्थाओं का समर्थन या प्रचार नहीं करती है।

योजना घर मंगाने, शुल्क में छूट के साथ दरों व प्लान की विस्तृत जानकारी के लिए **पृष्ठ-38** पर देखें।

योजना की सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद पत्रिका प्राप्त होने में कम से कम 8 सप्ताह का समय लगता है। इस अवधि के समाप्त होने के बाद ही योजना प्राप्त न होने की शिकायत करें।

योजना न मिलने की शिकायत या पुराने अंक मंगाने के लिए नीचे दिए गए ई-मेल पर लिखें –
pdjucir@gmail.com
या संपर्क करें-
दूरभाष : 011-24367453
(सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रात: 9:30 बजे से शाम 6:00 बजे तक)

योजना की सदस्यता की जानकारी लेने तथा विज्ञापन छपवाने के लिए संपर्क करें–
अभिषेक चतुर्वेदी, संपादक, पत्रिका एकांश
प्रकाशन विभाग, कमरा सं. 779, सातवां तल,
सूचना भवन, सीजीओ परिसर, लोदी रोड,
नयी दिल्ली-110003

इस अंक में...

7 बुनाई की आकर्षक दुनिया, भारतीय बुनाई में क्षेत्रीय विविधता
आरटीए कपूर चिश्ती

15 भारत की बुनाई : सहकार्यता और अंतर-सांस्कृतिक प्रभाव
प्रोफेसर उषा नेहरू पटेल

21 भारतीय बुनाई के स्थायित्व को प्रोत्साहन
ललित कुमार गुप्ता

23 गुजरात के शिल्प और बुनकर
आरोहीबेन पटेल

27 खादी : भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक
ए अन्नामलाई

31 खादी की विशिष्टता
विनित कुमार

33 भारत के हथकरघा उत्पाद
लोकल टू ग्लोबल
डॉ प्रलोक गुप्ता
पुष्पेंद्र राजपूत

39 भारतीय बुनाई का ताना-बाना और तकनीकी विकास
डॉ पीयूष गोयल

44 क्या आप जानते हैं?

47 पुस्तक चर्चा
मधुबनी पेंटिंग
भारतीय वेशभूषा

49 आजीविका के रूप में बुनकर व्यवसाय
मालविका हलवासिया

आगामी अंक : भारत के किले

प्रकाशन विभाग के देशभर में स्थित विक्रय केन्द्रों की सूची के लिए देखें पृ.सं. 30

योजना हिंदी, असमिया, बांग्ला, अंग्रेज़ी, गुज़राती, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु, मराठी, ओड़िया, पंजाबी तथा उर्दू में एक साथ प्रकाशित।

अब उपलब्ध

नये कलेवर, आकार, सभी रंगीन पृष्ठों और नए स्तम्भों के साथ

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए उपयोगी

आज ही अपनी प्रति खरीदें

सदस्यता के लिए स्कैन करें

प्रकाशन विभाग

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली -110003

वेब साइटः publicationsdivision.nic.in

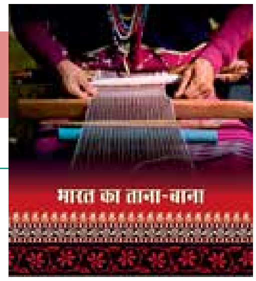

परंपरा का ताना-बाना

भारत के सांस्कृतिक परिवेश की गूढ़ संरचना में हथकरघा उद्योग के रूप में देश की समृद्ध विरासत और कलात्मक कौशल के प्रमाण मौजूद हैं। कश्मीर की हिमाच्छादित घाटियों से लेकर कन्याकुमारी के धूप से नहाए तटों तक भारत का विविध परिदृश्य हस्त कौशल से सृजित असाधारण वस्तुओं की बहुरंगी छटा से सुशोभित है और प्रत्येक में सदियों पुरानी परंपराओं और शिल्प कौशल की अमिट छाप देखी जा सकती है। हमने भारत की हथकरघा धरोहर के जटिल ताने-बाने के माध्यम से इसकी विस्तृत जानकारी देने का प्रयास किया है जो देश के सामाजिक-आर्थिक परिवेश में इसके अद्वितीय सौन्दर्य और महत्व को रेखांकित करता है।

भारत की हथकरघा धरोहर के केंद्र में निहित है बुनकरों की गहन विरासत, जिनके कुशल हाथों ने विश्व के कुछ उत्कृष्ट वस्त्रों में जान फूंक दी है। भारत के असंगठित क्षेत्र में कृषि के बाद दूसरे स्थान पर आने वाला हथकरघा क्षेत्र देश भर में तीन मिलियन से अधिक कारीगरों के लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। कश्मीर की जटिल विवरण और कढ़ाई वाली पश्मीना शॉल से लेकर गुजरात की आकर्षक बंधनी साड़ियों तक हथकरघा उद्योग के मजबूत एवं सतत शिल्प कौशल को दर्शाते हैं, जो हालांकि परंपरा से गहन रूप से जुड़ा है पर साथ ही आधुनिक रुझान के अनुकूलनीय है।

भारतीय हथकरघा उत्पादों द्वारा हासिल वैश्विक पहचान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और ये अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश की सांस्कृतिक समृद्धि के राजदूत के रूप में काम करते हैं। कुशल कारीगरी और दृढ़ समर्पण के चलते भारतीय बुनकरों ने वैश्विक बाजार में अपने लिए एक जगह बनाई है जिसका निर्यात कोविड-19 महामारी की शुरुआत से पहले 300 मिलियन डॉलर वार्षिक से अधिक था। बाजार की मांग में उतार-चढ़ाव और मशीन-निर्मित वस्त्रों से प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद भारत के हथकरघा क्षेत्र की स्थिति सुदृढ़ बनी हुई है जिसे अंतरराष्ट्रीय मांग बढ़ाने और स्वदेशी ब्रांडिंग को बढ़ावा देने की पहल और उपायों का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है।

दरअसल, भारतीय हथकरघा की गाथा मात्र आर्थिक महत्व की नहीं है बल्कि सांस्कृतिक जीवटता और पहचान के संरक्षण का वृतांत भी है। देश भर में, कच्छ में भुजोड़ी, अहमदाबाद में आशावली और उत्तर प्रदेश में वाराणसी जैसे हथकरघा समूह परंपरा के गढ़ के रूप में हैं जहां सदियों पुरानी बुनाई शैली पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। ये समूह न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को कायम रखते हैं बल्कि निवासियों में सामुदायिक और सांस्कृतिक गौरव की भावना को भी बढ़ावा देते हैं।

जैसे-जैसे हम भारत की हथकरघा विरासत के विविधरूपी जगत में आगे बढ़ते जाते हैं उन संयुक्त प्रयासों को स्वीकारना महत्वपूर्ण हो जाता है जिन्होंने इसके पथ को सार्थक दिशा प्रदान की है। सरकारी निकायों, कारीगर समुदायों और उद्योग से जुड़े लोगों सहित विभिन्न हितधारकों ने इस गौरवशाली विरासत को पोषित करने और उन्नत बनाने में योगदान दिया है। कौशल विकास, बाजार पहुंच और संसाधन प्रावधान के उद्देश्य से उठाई गई पहलों के माध्यम से एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र उभरा है जो घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के हथकरघा क्षेत्र के विकास और मौजूदगी को बढ़ावा दे रहा है।

'योजना' के इस अंक में हमने विभिन्न विषय विशेषज्ञों और विद्वानों के ज्ञान और जानकारी को संजोया है जो भारतीय हथकरघा उद्योग के बहुमुखी आयामों पर प्रकाश डालता है। विद्वतापूर्ण लेखों और जानकारीपूर्ण विश्लेषण के माध्यम से हमने भारत की बुनकर परंपराओं की जटिलताओं को उजागर करने और लगातार विकसित हो रहे विश्व में उनकी चिरकालिक प्रासंगिकता को रेखांकित करने का प्रयास किया है। भारत की हथकरघा विरासत के जटिल ताने-बाने से गुजरते हुए आइए हम भावी पीढ़ियों के लिए इस कालातीत विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता का संकल्प लें। ❑

बुनाई की आकर्षक दुनिया, भारतीय बुनाई में क्षेत्रीय विविधता

आरटीए कपूर चिश्ती | कपड़ा विद्वान, 'साड़ी-ट्रेडिशन एंड बियॉन्ड' पुस्तक के सह-लेखक और संपादक।
ईमेलः rtakpurchitti@gmail.com

भारत से इस यात्रा की शुरुआत सुदूर दक्षिण पश्चिम में केरल राज्य से मुख्य रूप से 'श्वेत रंग' से हुई। 19वीं सदी के अंत में रासायनिक रंगों के आगमन से पहले भारत के सभी हिस्सों में 'सफेद रंग' प्रमुख आधार (बेस) रंग था। न केवल गर्म से उष्ण जलवायु की विवशता के कारण बल्कि प्राकृतिक रंगों की सीमित उपलब्धता और खर्च के कारण भी, सफेद रंग शुद्धता, तपस्या और संयम की एक पारंपरिक अभिव्यक्ति थी। सफेद रंग का सौंदर्य अनुभव वर्ग और समुदाय को कई तरह से अलग करता हुआ प्रतीत होता है, जिसमें गैर-विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए वजनदार, ठोस कपड़ों से लेकर कुलीन लोगों के लिए बढ़िया कपड़े और यहां तक कि अमीर लोगों के लिए रेशम के कपड़े भी शामिल हैं। शुभ अवसर को चिह्नित करने के लिए शादी की साड़ी अक्सर कोरा (बिना ब्लीच की हुई), बिना धुली हुई और हल्दी छिड़की हुई होती थी।

रासायनिक रंगों और ज़री (सोने के धात्विक धागे) के सस्ते विकल्पों ने अनजाने में सामाजिक परिवर्तन के द्वार खोल दिए, जिसे तब तक पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं मिली थी। रंग और चमकदार सतही अलंकरणों का अत्यधिक उपयोग जिसे हम आज भारत के साथ आम तौर पर जोड़ते हैं, वह 20वीं सदी की स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति है जो स्वतंत्रता के बाद के उत्साह और क्षेत्रीय और सामुदायिक बंधनों से मुक्त होने से बढ़ी है।

केरल में बुनकर अपने 'सीमित' पैटर्न तत्वों के बारे में बात करने में मितभाषी और शर्मीले थे, हालांकि जैसे ही उन्हें एहसास हुआ कि उनके अच्छी तरह से बुने हुए मुख्य रूप से सफेद कपड़ों की सुंदरता और संयम की सराहना की जाती है,

अपनी बुनाई को जानें

पोचमपल्ली इकत

तेलंगाना राज्य के नलगोंडा जिले से उत्पन्न, पोचमपल्ली इकत में पारंपरिक ज्यामितिक और अमूर्त पैटर्न हैं। बुनाई से पहले एक्सपोज हिस्से को बार-बार बांधने (मजबूत करने) और रंगाई के माध्यम से धागों को अलग-अलग रंगों में परिवर्तित करके तैयार किया जाता है। वे सूती और रेशम दोनों में बुने जाते हैं।

पैठणी साड़ी

इसका नाम महाराष्ट्र के एक शहर पैठण से लिया गया है, जहां इसका उत्पादन 2000 वर्षों से अधिक समय से किया जा रहा है। पैठणी मूल रूप से एक सजावटी जरी पल्लव और बॉर्डर वाली एक रेशम साड़ी है। प्रयुक्त रूपांकन अधिकतर पारंपरिक लताएं, फूल, फलों की आकृतियां और पक्षियों की शैलीबद्ध आकृतियां हैं। पैठण की एक खास विशेषता यह है कि डिजाइन तैयार करने के लिए किसी यांत्रिक साधन का उपयोग नहीं किया जाता है।

तो वे उत्साहित हो गए। उनके अच्छी तरह से बुने हुए वस्त्र को उसके बार्डर में सीमित रंग देकर दर्शाया गया था, जिसे विशेष अवसरों के लिए सोने से बनाया जाने लगा, जिसमें धारीदार रंग अथवा सोना लगाकर पूरा किया जाता था जो ग्राउंड से उठा हुआ होता था। इन्हें केरल के अधिकांश हिस्सों में मुंडू वेष्टी और कसावु साड़ियों के साथ-साथ धोतियों की बुनाई में व्यापक रूप से देखा जाता है, जिसकी शुरुआत दक्षिण में बलरामपुरम से होती है। उत्तर की ओर कासरगोड और चेंदमंगलम में इनके सरल संस्करण बुने जा रहे हैं। केरल में हथकरघा और कई मिलें घरेलू लिनेन जैसे तौलिए और कॉम्पैक्ट बुनाई वाली चादरों की एक श्रृंखला के लिए भी प्रसिद्ध हैं, जो भारत और उसके बाहर भी प्रसिद्ध हैं।

कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र से उत्तर की ओर बढ़ते हुए देखें तो पता चलता है कि यह अपने असंख्य प्लेन वस्त्रों, शॉट्स, धारियों और चेकों में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं, फिर भी स्पष्ट रूप से अलग हैं, अक्सर कपास और रेशम का कई सरल तरीकों से संयोजन करते हैं।

कर्नाटक में, 'मोलकालमुरु' जैसे स्थानों में कपास और रेशम की बुनाई के केंद्र सूत प्रतिरोध और ताने-बाने में पैटर्न वाले तत्वों के साथ और 'इल्कल' अपने तीन शटल बुनाई और अतिरिक्त ताने-बाने पैटर्न के साथ बढ़ते रहते हैं। 'उडुपी', 'कोल्लेगल' और 'रुक्मपुर' में कपास के साथ-साथ उनकी साड़ियों और कपड़ों के लिए प्रसिद्ध हैं। नवलगुंड फर्श कवरिंग, सूती और रेशम में 'गुलेदगुड खानाब्लाउज' कपड़ों के लिए प्रसिद्ध हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि कई रेशम जिन्हें कश्मीर, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश सहित भारत के अन्य हिस्सों में हाथ से नहीं बुना जा सकता है, कर्नाटक में बेचे जाते हैं जिन्हें 'डुपियन रेशम' के रूप में जाना जाता है। जो एक ऐसा कपड़ा बनाने के लिए महीन रेशम के ताने के साथ असमान स्लब्ड बाने के धागे का उपयोग करता है जिसकी बनावट समान रूप से काते गए रेशम की तुलना में अधिक होती है।

बुनाई की विरासत वाले एकमात्र राज्य के रूप में गोवा पर पुर्तगालियों द्वारा प्रतिबंध लगाया जाना एक अप्रत्याशित रहस्योद्घाटन था। बुनकर सचमुच तहखानों में भूमिगत हो गए और अपने करघे के लिए खुदाई करने लगे। वफादार कुनबी खेत मजदूरों, कोली महिला मछुआरों और धांगड़ चरवाहों की मांग ने उनकी बुनी हुई साड़ियों के लिए तैयार बाजार उपलब्ध कराया। जान की धमकी या सज़ा की धमकी के बावजूद, वे 1990 के दशक की शुरुआत तक, आज़ादी के लगभग 30 साल बाद तक, पड़ोसी राज्यों से सस्ती साड़ियों के आगे दबते रहे।

पाटन पटोला

गुजरात के पाटन क्षेत्र से उत्पन्न, पटोला एक डबल इकत साड़ी है, जिसमें ताने और बाने को लटकते करघे पर बुनने से पहले धागों की सटीक गिनती के अनुसार बांधा और रंगा जाता है। पटोला रेशम साड़ियाँ अपने जीवंत रंगों, बोल्ड ज्यामितीय डिजाइन और विविध विशेषताओं के लिए जानी जाती हैं।

कांचीपुरम रेशम

तमिलनाडु के कांचीपुरम के मंदिरों से प्रेरित होकर, साड़ियों को ताने और बाने दोनों में शहतूत रेशम से उत्कृष्ट ढंग से बुना जाता है और इसमें जटिल कोरवल और पेटनी तकनीकों का उपयोग करके ठोस रंग की सीमाएं और पल्लव होते हैं। उत्तम कांचीपुरम साड़ियों में मोर, हाथियों से लेकर घोड़ों तक शुद्ध जरी अलंकरण और मनमोहक रूपांकन होते हैं। वे रुद्राक्षम, थालमपुरेक्कू और मयिल चक्र डिजाइनों से पूरित हैं।

कोटा डोरिया

इसका नाम इसके मूल स्थान, राजस्थान के कोटा के नाम पर रखा गया है, यह कपड़ा चौकोर चेक पैटर्न में कपास और रेशम का एक अनूठा मिश्रण है। रेशम चमक प्रदान करता है, जबकि कपास के धागे इस कपड़े को मजबूती प्रदान करता है। चेक किए गए पैटर्न को 'खट' कहा जाता है और यह कोटा डोरिया की खास विशेषताओं में से एक है।

चेक और रंग संयोजन की जटिलता ही उन्हें उनके पड़ोसियों से अलग करती थी।

महाराष्ट्र में, हमें वर्धा के क्षेत्र में कपास की खेती और दक्षिण-पूर्व में विदर्भ और गढ़चिरौली में रेशम की खेती का व्यापक आधार मिलता है। महाराष्ट्र का पूर्वी क्षेत्र अपने नागपुर और पुनेरी रेशम और सूती साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। पश्चिम की ओर बढ़ते हुए, शुद्ध रेशम में 'करवट काठी' और 'जोटे' और 'पाटल' साड़ियों में बॉडी और बोर्डेर्स में सूती रेशम के मिश्रण का उपयोग बड़ी प्रवीणता से किया जाता है ताकि भारी बार्डर के साथ अच्छी तरह से बुना हुआ ग्राउंड तैयार हो सके। महाराष्ट्र की साड़ियों की पूरी श्रृंखला, पैटर्न की एक विस्तृतश्रृंखला बनाने के लिए इंटरलॉक टेपेस्ट्री तकनीक का उपयोग करके पैथनकॉटन और रेशम के उपयोग से पूरी की जाती हैं, जो तेजी से प्रसिद्ध हो गई है और बुनकरों और उपयोगकर्ताओं दोनों के बीच रुचि की शुरुआत दोबारा हो गयी है। अमरावती के कई गाँवों में दरी-फर्श कवरिंग की बुनाई भी की जा रही है।

गुजरात बुनाई, प्रिंट और बांधनी कपड़े का व्यापक उत्पादक आधार रहा है, जो पहले कच्छ क्षेत्र तक ही सीमित था लेकिन अब सौराष्ट्र और मुख्य भूमि तक भी फैल गया है। यह गुजरात का यंत्रीकृत कपड़ा उद्योग है जो विशेष रूप से आजादी के बाद काफी बढ़ गया है, और इसकी पुरानी मिल मशीनरी ने सूरत के साथ-साथ महाराष्ट्र के इचलकरंजी, मालेगांव और भिवंडी जैसे स्थानों में विशाल पावरलूम-उत्पादक बेल्ट बनाने के लिए भी काम किया है। यह गुजरातियों में जन्मजात उद्यमशीलता कौशल है जिसने कुछ बुनकरों और मुद्रकों को 1970 के दशक में 'गुर्जरी' जैसी विपणन एजेंसियों और बाद में अन्य गैर सरकारी संगठनों और निजी एजेंसियों की मदद से जीवित रहने में सक्षम बनाया है।

हालांकि राजस्थान में फर्श कवरिंग, दरी की कताई- बुनाई के साथ-साथ प्लेन फ़ैब्रिक की परंपरा रही है इन्हें महिलाओं के परिधान बनाने, निचले और ऊपरी वस्त्रों को बनाने के साथ साथ पुरुषों की धोती, शर्ट और ऊपर हिस्से में पहनने वाले कपड़ों पर प्रिंट किया जाता था।हालांकि हाथ से कढ़ाई और बुनाई में सीमित वृद्धि देखी गई है, लेकिन प्रिंट और मिल क्षेत्र में इनकी प्रचुरता बढ़ी है विशेषकर पुरुषों के औपचारिक परिधान के लिए।

पंजाब और हरियाणा, जो 1964 से अलग राज्य बन गए हैं, में घरेलू लिनन, फर्श कवरिंग और रोजमर्रा के पहनने के लिए मोटे कपड़े की बुनाई का एक व्यापक आधार था, जिसने काफी हद तक मिलों को रास्ता दिखा दिया है। कढ़ाई जो व्यापक रूप से प्रचलित थी, विशेष रूप से मोटे सूती शॉल और सजावटी घरेलू उपयोग में, अब महीन शिफॉन और चिनोन में बदल गई है और सिले हुए सलवारकमीज़ के साथ अभी भी लोकप्रिय है। आजादी के बाद जो मिलें काफी विकसित हुई हैं, वे बड़े पैमाने पर प्रिंटेड और सादे दोनों तरह के ऊनी कपड़ों और शॉलों के साथ-साथ मशीन से बुने हुए कपड़ों के लिए जानी जाती हैं।

हिमाचल प्रदेश, जो 1964 से पहले पंजाब का हिस्सा भी था, हमेशा अपने कुल्लू और किन्नौर कपड़ों और शॉलों के साथ-साथ कंबल और हेडवियर सहित फर्श और बिस्तर लिनन के घरेलू उत्पादों के लिए प्रसिद्ध रहा है। रंग और पैटर्न के प्रचुर उपयोग के साथ, स्वतंत्रता के बाद के भारत में इनका व्यापक रूप से विकास हुआ है।

जम्मू और कश्मीर के साथ-साथ लद्दाख और उत्तराखंड में मोटे से महीन पश्मीना भेड़ और बकरी के ऊनों की ऊन कताई का एक विस्तृत आधार है, जो परिधानों और शॉलों, रोजमर्रा के उपयोग के लिए कंबल और विशेष अवसरों के लिए खुदरंग/पैटर्न वाले स्व-रंगीन कपड़ों की एक व्यापक किस्में हाथ से बुनीं जाती हैं।, बाद में इनके बाहरी किनारों पर या हर जगह विभिन्न गुणवत्ता

विरासत

जरी के साथ बनारसी साटन तनचोई साड़ी

साटन की बुनाई में मल्टी-कलर इंटरवॉवन में अनोखी डिजाइन

छोटे जटिल रूपांकनों से सजे हुए फूल, छोटे पक्षी मोर और तोता मोती

और डिजाइन के शानदार प्रकृति-प्रेरित फूलों वाले पैटर्न में कढ़ाई की जाने लगी। मोटे ऊन को भी विभिन्न प्राकृतिक रंगों के नमदा/फेल्टेड फर्श कवरिंग में शामिल किया जाता था या रंगाई या कढ़ाई के साथ सजाया जाता था। ऊनी बुनाई की समृद्ध विरासत में भी कुछ वृद्धि और सहयोग देखा गया है। कश्मीर के साथ-साथ, पश्चिम बंगाल के बिष्णुपुर केवल दो क्षेत्र थे जहां शहतूत रेशम की पारंपरिक रूप से खेती की जाती थी, और स्वतंत्रता के बाद रेशम की कताई और बुनाई में वृद्धि देखी गई।

मध्य प्रदेश और नव निर्मित राज्य छत्तीसगढ़ से पता चलता है कि कैसे एक व्यापक आधार चंदेरी, महेश्वर और बिलासपुर जैसे प्रसिद्ध बुनाई केंद्रों का भरण पोषण करता है। पूर्व से पश्चिम तक लगभग 2000 कि.मी. दूर तक, इसमें कपास की खेती, हाथ से कताई, बुनाई, छपाई और रंगाई की एक लंबी परंपरा रही है। हालांकि हाथ से कताई काफी हद तक कम हो गई है, लेकिन इसकी बुनाई का आधार बढ़ गया है, खासकर ऊपर उल्लिखित तीन प्रसिद्ध केंद्रों में। मध्य राज्य छत्तीसगढ़ से 'तसर' और राज्य के भीतर मिलों से कपास की आपूर्ति में कुछ प्रसार देखा गया है, साथ ही सौसर जैसे स्थानों से सूती कपड़े और साड़ियों की रेंज में उत्पादन में वृद्धि हुई है, हालांकि राज्य के कई हिस्सों में दरी बुनाई भी बढ़ी है।

उत्तर प्रदेश में बढ़िया सूती साड़ी उत्पादन का एक व्यापक आधार है: बुनी हुई, कढ़ाई की हुई प्रिंटेड साड़ियां, जो वाराणसी के व्यापार और सांस्कृतिक केंद्र में देखी गई बेहतरीन तकनीकी

पश्मीना ऊनी साड़ी

फैशन में अपनी सुंदरता, गर्माहट, कोमलता, स्पष्टता, सौंदर्यपूर्ण विविधता और कालातीतता के लिए जाना जाता है।

कुनबी साड़ी

गोवा आदिवासी सूती साड़ी को दुनिया भर में कुनबी साड़ी के नाम से जाना जाता है

साड़ियाँ मूल रूप से गोवा में हैंडलूम पर बनाई जाती थीं और इसका उल्लेख आदिवासी लोक गीतों में भी किया गया है

और सौंदर्य संबंधी उत्कृष्टता से परिपूर्ण है। इस सांस्कृतिक राजधानी ने मुगल कारखानों की स्थापना के बाद पूरे राज्य के साथ-साथ सुदूर फारस से भी बुनाई कौशल को ग्रहण किया है और तिब्बत और दक्षिण एशिया के अन्य हिस्सों के साथ इसका लंबे समय से व्यापार रहा है। इसे विशेष रूप से दक्षिण भारतीय बाजार के साथ-साथ पूर्व में बंगाल के लिए बुना गया है, और इसने विभिन्न राज्यों के बुनकरों को भी शामिल किया है। इसलिए, प्रसिद्ध हील लिफ्टेड गेथुआ, कढ़वा करघा कढ़ाई, फेक्वान शटल बुनाई और कतरवा या नीचे की ओर धागे की कटाई ने अत्यधिक पारदर्शी 'ऑर्गेन्ज़ा', 'चिनॉन' और 'शिफॉन' से लेकर सबसे भारी पैटर्न वाले रेशम 'ब्रोकेड' तक, फ़ैब्रिक को एक व्यापक विविधता प्रदान की है, जिसने इसकी प्रसिद्धि को आज तक जीवंत रखा है।

बिहार, बंगाल और ओडिशा का अतीत साझा है लेकिन वे अलग-अलग रूप से विकसित हुए हैं। बिहार में घरेलू उपयोग और परिधान के लिए 'तसर' कपड़ों के साथ-साथ तसर साड़ियों की रेंज में वृद्धि हुई है, विशेष रूप से भागलपुर क्षेत्र से, जिसने 1980 के दशक से पुनरुद्धार देखा है। विशेष रूप से, मालदेही और लालदेही साड़ियों ने ताने और बाने से बने स्व-पैटर्न वाले तसर की एक रेंज को प्रेरित किया है, जो कपड़ों और घरेलू उपयोग के लिए फर्निशिंग और कपड़ों के प्रसार के कारण 1950 के दशक से लगभग गायब हो गए थे। 1990 के दशक के बाद से इसकी कपास रेंज भी नालंदा क्षेत्र में विकसित हुई है।

मंगलगिरी साड़ी

आंध्र प्रदेश राज्य का एक लोकप्रिय हथकरघा उत्पाद

इसमें जरी या सुनहरे धागे का काम है, जिसे निजाम बॉर्डर और पल्लव से सजाया गया है

पाटन पटोला साड़ी

डिजाइन पैटर्न ज्यामितीय ग्राफ-आधारित होते हैं, जिसमें ताना-बाना बांधा और रंगा जाता है

बुनाई लटकते करघे पर की जाती है, जिसमें सफेद और लाल रंग उनकी बुनाई के प्रमुख रंग हैं

बिहार का दक्षिणी भाग, जो अब नवनिर्मित झारखंड राज्य है, अपने आदिवासी समुदायों के लिए मोटे सूती साड़ियों के साथ-साथ 'तसर' की खेती, कताई और बुनाई की एक विस्तृत श्रृंखला का दावा करता है। कताई और बुनाई की संभावनाएं बहुत अधिक हैं और ये विशेष रूप से एनजीओ क्षेत्र में बढ़ी हैं। कुशन, फर्श कवरिंग और बिस्तर लिनन जैसे घरेलू उत्पादों की बुनाई भी इस क्षेत्र में बढ़ गई है।

पश्चिम बंगाल ने अपनी साड़ी बुनाई में अधिक निरंतरता देखी है, हालांकि करघा प्रौद्योगिकी के उन्नयन के कारण इसने अपने मोटे सूती कपड़ों को खो दिया है। इसके महीन कपास का प्रसार हुआ है। नादिया जिले के जॉयगोपालपुर गाँव के परिमल दास कहते हैं, "अब रंगों का विस्फोट हो गया है, पैटर्न का विस्फोट हो गया है।" एक बार में 30 साड़ियों की ड्रम ताना तैयारी के साथ, साड़ी उत्पादन कम श्रमसाध्य और अधिक लाभदायक हो गया है। यह बात नादिया जिले के फुलिया में एक अन्य युवा बुनकर कहते हैं, जबकि ब्रश साइजिंग के बजाय हैंक साइजिंग बनाना और जेकक्वार्ड के आने से पैटेर्निंग के पैमाने को बढ़ा दिया गया है इस प्रक्रिया में गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है, लेकिन पश्चिम बंगाल के बुने हुए और कढ़ाई वाले दोनों उत्पादों का बाजार काफी बढ़ गया है।

बिष्णुपुर का स्वदेशी शहतूत रेशम और मालदह जैसे तसर का रेशम, अपने वजन और चमक की गुणवत्ता में भिन्न थे। हालांकि बुनकर अपनी महत्वता के घट जाने की निंदा करते हैं, क्योंकि वे अपने वर्तमान की तुलना अतीत से करते हैं जब एक साड़ी की आधी लागत में उनकी मजदूरी शामिल होती थी।

सात उत्तर-पूर्वी राज्य, जो सिलाई और बुनाई पैटर्निंग दोनों में अपने बुनाई कौशल के लिए जाने जाते हैं, विभिन्न प्रकार के सूती और सफेद के कई शेड में एरी जैसी सिल्क और सुनहरे मुगा भारत के सभी भागों में विभिन्न रंगों के साथ, अपनी उपस्थिति महसूस करा रहे हैं।

असम अपने मेखला चादर, गमछा और साड़ियों के बढ़ते उत्पादन के लिए जाना जाता है। अरुणाचल की गेल और गलुक भी तेजी से पसंद और उत्पादित की जा रही है। त्रिपुरा में 'एरिशा', 'पचरा', 'लिसेम्फी' स्थानीय क्षेत्रीय परिधान और चादर बुनाई में तेजी देखी जा रही है। मिजोरम की बात करें तो 'पुआनचेई पुआन', 'तवललोह पुआन', 'नगोटेखेर या पुआन हुइह', 'हमाराम पुआन', 'थांगछुआब पुआन' और 'पोंडम पुआन' की पहचान तेजी से बढ़ रही है। मेघालय में, का 'जैनसेम' और 'सिल्क स्टोल' की बुनाई स्पष्ट रूप से बढ़ी है। मणिपुर में 'इन्नाफी', 'वांग्खेई फी', 'फी माटेक (चुन्नी)', 'चुन्नी रानी फी', 'प्लेन फानेक', 'स्ट्राइप फानेक', 'खुदाई' और 'लेंगयान (गामाछा)' ने अपना प्रभाव डाला है।

नगालैंड में, पुरुषों और महिलाओं के लिए ऊपरी आवरण जैसे 'संगतम', 'सेमा', 'नी-मायोन', 'निकोला', 'ज़े-लियांग्स-रोंग', 'राइको' और 'अलुंगस्टु' और निचले आवरण जैसे 'अजू जांगुप सु', 'मेचला', 'नीखरो', 'मोयेर टस्क' और 'सुतार' अपने विशिष्ट जनजातीय समुदायों के लिए बुने जाते हैं, जिन्हें तेजी से पहचान मिल रही है।

ओडिशा में, असाधारण गुणवत्ता वाली सूती और रेशम-पैटर्न वाली साड़ियों ने यार्न-प्रतिरोधी इकत साड़ियों के सामने अपनी जगह खो दी है, जिन्होंने व्यापक बाजार हासिल कर लिया है। कुछ असाधारण पैटर्न वाले सूती कपड़े पटना संग्रहालय में हैं, लेकिन नरसिंहपुर, जिला कटक में, मर्करीकृत धागे पर निर्भरता बढ़ रही है, जिसमें आकार देने की आवश्यकता नहीं होती है, जैसे साड़ी के जमीनी भाग में कॉटन के साथ मिश्रित धागे और पैटर्न में तसर और रेशम के साथ साड़ियां, अब मिलनी बंद हो गई हैं। सौभाग्य से, जाजपुर जिले के गोपालपुर गाँव में भिखारी

पलुरु कॉटन सिल्क साड़ी

सादे जरी बॉर्डर वाली हल्की साड़ियाँ

पल्लव को धारियों से बुना जाता है, जबकि इसके अलावा अन्य हिस्सा सामान्यत: सादा होता है

गोपालपुर तसर सिल्क साड़ी

2012 में भौगोलिक संकेत वस्तु अधिनियम 1999 के तहत पंजीकृत।

प्रयुक्त रूपांकनों में पक्षी, चक्र (पहिया), और प्रकृति से प्रेरित पशु रूपांकन हैं।

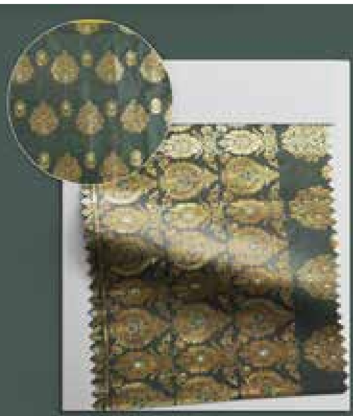

मेखला साड़ी

भारत के असम राज्य की एक लोकप्रिय साड़ी

पारंपरिक असमिया रूपांकनों से प्रेरित जरी की आकृतियों से सजाया गया

सूर जैसे बुनकर हैं, जिन्होंने कांटाफुल, गेंदुफुल, पदमफुल या कदमफुल की सात पंक्तियों वाली सात फुलिया जाला तसर साड़ी का वर्णन किया है। दैनिक उपयोग की साड़ियां कपास से बुनी जाती थीं और विशेष अवसरों के लिए, तसर में। दोनों में, अतिरिक्त बाना/अतिरिक्त ताना अलंकरण भारी तसर, प्राकृतिक या रंगीन में था। इससे साड़ी को एक अनोखी चमक और आभा मिल गई। ऐसी कई साड़ियां कलिंगा वस्त्र संग्रह के लिए बुनी गईं और 1996 में बेची गईं।

पूर्वी तट के साथ दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, हम आंध्र प्रदेश में आ गए हैं, जो उत्तर और दक्षिण का एक और मिलन बिंदु है, जहां मोटे से महीन सूती कपड़े, रेशम का मिश्रण और करघा कढ़ाई, सूत-प्रतिरोध और सतह सहित बुनाई कौशल की रंगाई पेंटिंग और छपाई एक श्रृंखला होती है। मोटे सूती कपड़े सबसे अधिक व्यापक थे, हालांकि आज के युवा 'उन्हें अपना नहीं पाएंगे। यह बात कर्नूल जिले के येम्मिगनूर गाँव में नरसम्मा ने कही। गुंटूर जैसे स्थानों में बेहतर गिनती के लिए "पट्टीबाड़ी में सरल दो-उंगली की चौड़ाई वाला बार्डर गहरे पके रंगों में घने रूप से बुना हुआ होता है..." 'वेंकटगिरी', 'उप्पाडा' और 'गढ़वाल' में बेहतरीन सूती कपड़े, रेशम के बॉर्डरों और एंड पीसेस के साथ राजघरानों और अमीर लोगों द्वारा पसंद किए जाते हैं। "वेंकटगिरी की खासियत 'चेल्नेथा क्रॉस-शेडेड' बीटिंग है, जो एक महीन और हल्के ढांचे में होता है जो रेशमी बॉर्डर के साथ ज़री के किनारों की खूबसूरती को बढ़ाती है। आप देखिए, चेल्नेथा साड़ी धोने के बाद भी अच्छी लगती है, बिना स्टार्च वाली कोई भी अन्य साड़ी कुत्ते की जीभ की तरह लटक जाएगी," यह एक बुनकर कहता है। आर्मूर, नारायणपेट और धर्मावरम के भारी रेशम बढ़ते संरक्षण और बाजार पहुंच के साथ उभरे।

आंध्र प्रदेश हमें सीधे तमिलनाडु में ले जाता है, जो हमारी यात्रा की परिणति है, जो रूपांकनों के परिष्कृत और परिभाषित होने, एक रहस्यमय रंग पैलेट, और कपास और रेशम की निपुणता, विशिष्ट रूप से या संयोजन द्वारा चिह्नित है। मोटे से लेकर महीन सूती सफेद, रंगीन और धारीदार या चेक की एक विस्तृत श्रृंखला से हमें एहसास होता है कि बुनकर समुदाय गुणवत्ता को बनाए रखने में कैसे सक्षम है "लंबे ताने के आकार के अनुसार... कम से कम दस से तीस लोगों के प्रयास की आवश्यकता होती है, मुख्य रूप से परिवार और रिश्तेदार," कांचीपुरम जिले के चेंगलपट्टू में एक बुनकर कहते हैं। इस तरह, बुनकर को पैतृक और मातृ पक्ष के कम से कम दस सदस्यों का समर्थन प्राप्त था जिन्हें 'मामनम मचानम' कहा जाता था।

'ऊसी वनम' सुई की महीन धारियों से लेकर 'थंडावलम' बोल्ड जोड़ीदार धारियों तक, सूती या रेशम में या दोनों नाम या स्केल द्वारा कोडित, धारियों, चेक और कोरवैथ्री शटल मंदिर शिखर रूपों की कई विविधताओं से तमिलनाडु डिजाइन भंडार का विस्तार हुआ है क्योंकि प्रकृति और मंदिर वास्तुकला से प्रेरित जटिल ताने-बाने पैटर्न को अपनाकर इसने अपना विस्तार किया है। रंग, पैमाने और कपड़े की संरचना की सटीकता ही तमिलनाडु की साड़ियों की अलग पहचान है।

सैद्धांतिक रूप से, सामाजिक या आर्थिक रूप से बढ़े हुए मशीनीकरण की निंदा करने की कोई आवश्यकता नहीं है, और वास्तव में, इसे हाथ-कौशल क्षेत्र के साथ विरोध करने की आवश्यकता नहीं है। हस्त-कौशल क्षेत्र, वास्तव में, विकास के लिए आधार अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला है जो इसके भीतर और उत्पादन की बढ़ती मशीनीकृत प्रणालियों दोनों में हो सकता है। यह डिज़ाइन और तकनीकी नवाचारों दोनों के लिए आदर्श स्थान प्रदान करता है, जिन पर कम समय में अधिक टर्नओवर की व्यस्तता के कारण तेज़ उत्पादन तंत्र में उचित ध्यान नहीं दिया जा सका। हम सत्तर से सौ वर्षों में वह हासिल करने के लिए औद्योगीकरण कर रहे हैं जो दुनिया ने औद्योगीकरण के दो सौ पचास वर्षों में हासिल करने का प्रयास किया था। इसके अलावा, हम तेजी से तेज़ी से बढ़ रहे हैं क्योंकि बाकी दुनिया इससे बाहर निकलने के तरीके ढूंढने की कोशिश कर रही है क्योंकि जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी पर प्रभाव के साथ नकारात्मक प्रभाव अधिक शक्तिशाली होता जा रहा है।

इकत सारी

जटिल डबल इकत शैली में उड़ने वाले शटल करघे में बुना गया

एक्सपोज हिस्से को बार-बार बांधने और रंगने से पैटर्न को अलग-अलग रंगों के धागों में बदल दिया जाता है।

कांची कॉटन साड़ी

तमिलनाडु के कांचीपुरम जिले और उसके आसपास के क्षेत्र में इसकी विशेषता

पारंपरिक रूपांकनों के साथ चौड़े बॉर्डर और पल्लव

पोचमपल्ली इकत साड़ी

एक पारंपरिक परिधान जो तेलंगाना के नलगोंडा जिले के भूदान पोचमपल्ली से उत्पन्न होता है।

उपयोग किए गए रूपांकन ज्यामितीय और अमूर्त हैं और कपास और रेशम दोनों में बुने हुए हैं।

समकालीन संदर्भ में, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण की बढ़ती मजबूरी के बावजूद, पारिस्थितिक रूप से व्यवहार्य और मजबूत विकास के बारे में जागरूकता भी बढ़ रही है। कुशल हाथों से कताई और बुनाई के अपने समृद्ध संसाधनों के साथ, भारत मशीनीकृत और उच्च-प्रौद्योगिकी के साथ धीमे लेकिन उच्च-कुशल उत्पादन क्षेत्रों को संतुलित करने का रास्ता दिखाने के लिए लाभप्रद स्थिति में है।

यद्यपि कार्ट लाइनिंग, घरेलू साज-सज्जा इत्यादि के खंडों को बड़े पैमाने पर 21वीं सदी की शुरुआत तक निर्मित विकल्पों ने अपने कब्जे में ले लिया था, लेकिन ड्रेप्ड परिधान, विशेष रूप से साड़ी, मुख्य आधार बनी रही। आज, यह रोजमर्रा के लिए तेजी से लुप्त होने वाला परिधान है, साड़ी विशेष अवसर के रूप में बनी रहेगी। भारतीय महिलाएं आज सिले हुए कपड़ों और आसानी से बनाए रखने वाले धोने और पहनने वाले पश्चिमी कपड़ों के लिए प्राथमिकता दिखा सकती हैं, फिर भी, साड़ी पहचान और औपचारिकता दोनों के प्रतीक के रूप में बनी हुई है। दिलचस्प बात यह है कि साड़ी, बहुराष्ट्रीय कॉर्पोरेट संगठनों के बोर्डरूम, कानून कक्षों और अदालतों में और उन नए पावर पेशेवरों के बीच बढ़ती उपस्थिति का दावा कर रही है जो अपनी पहचान के प्रति सचेत हैं और इससे अपनी ताकत अंकित करना चाहते हैं। ❑

भारत की बुनाई
सहकार्यता और अंतर-सांस्कृतिक प्रभाव

प्रोफेसर उषा नेहरू पटेल

निदेशक-अकादमिक, भारतीय कला एवं डिजाइन संस्थान (आईआईएडी), नई दिल्ली।
ईमेलः usha.patel@iiad.edu.in

भारत में बुनाई, शताब्दियों के सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से अपनी प्राचीन उत्पत्ति से लेकर विकास तक, परंपराओं, नवाचारों और प्रभावों की निरंतरता को दर्शाती है जो आज तक देश की अनूठी वस्त्र-परंपरा को आकार देती है। परंपराओं और नवाचारों की सहकार्यता से भारतीय वस्त्रों की शाश्वत सुंदरता और शिल्प कौशल का विकास हुआ है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए देश की समृद्ध बुनाई परंपराओं की स्थिरता सुनिश्चित हुई है। हाल के वर्षों में, इन वस्त्रों के लिए वैश्विक स्तर पर सराहना ने भारत की बुनाई विरासत के महत्व को मजबूत किया है, जिससे बुनकर समुदायों के गौरव और पहचान को बढ़ावा मिला है। हाल के वर्षों में पारंपरिक बुनकरों और समकालीन डिजाइनरों के बीच बढ़ते सहयोग ने भारतीय वस्त्रों के परिदृश्य और बुनकर समुदाय की स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव किया है।

मिथकों और किंवदंतियों वाली भारत की प्राचीन भूमि में, जहां मिथक और किंवदंतियां हवा की सरगोशियों में अठखेलियां करती थी। एक कहानी काफी प्रचलित थी, वह थी देवताओं, दानवों और बुनाई की रहस्यमय कला की कहानी। देवताओं के दिव्य लोक में अद्वितीय बुनाई कौशल और सृजनात्मकता का धनी, एक दिव्य कारीगर रहता था जिसका नाम विश्वकर्मा। विश्वकर्मा के बुने अलौकिक वस्त्र देवलोक को सुशोभित करते और जगमगाते सितारों को टक्कर देने वाले थे। हुआ यूं कि विश्वकर्मा के इस अलौकिक बुनाई कौशल ने एक शक्तिशाली दानव वृत्र के मन में ईर्ष्या पैदा कर दी।

विश्वकर्मा के बुनाई के दिव्य रहस्यों को चुराने के लिए दृढ़ संकल्पित, वृत्र सीधे नश्वरक्षेत्र में अवतरित हुआ। उसकी उपस्थिति भूमि पर अंधेरा फैलाने लगी। उसने विश्वकर्मा के ज्ञान को हासिल करने की मांग की और इन्कार किए जाने की स्थिति में अराजकता फैलाने की धमकी दी। बुद्धि और साहस

से निर्देशित, अविचल विश्वकर्मा ने वृत्र की चुनौती का डटकर सामना किया। जैसे-जैसे विश्वकर्मा और वृत्त अपने भाग्य की रचना कर रहे थे, वास्तविकता का ताना-बाना उनके ब्रह्मांडीय द्वंद्व के भार से कांप रहा था। उनके भाग्य का फैसला करने के लिए उनके बीच बुनाई प्रतियोगिता चली।

सात दिनों और रातों तक, हस्तिनापुर का एक गाँव ऐसे तमाशे का गवाह बना जो इससे पहले कभी नहीं देखा गया था। अंत में, विश्वकर्मा की कलात्मकता और सृजनात्मकता की शक्ति तथा पवित्रता के सामने पाशविक शक्ति और काला जादू

विफल हो गया। उनकी अंतिम कृति इतनी शानदार थी कि वैकुंठ भी विस्मित होकर आंसुओं से सराबोर डूब गया। पराजित और दीन होकर, वृत्र वापस छाया में गायब हो गया।

आज भी, इस बुनकर की कथा सृजनात्मकता की शक्ति, अटूट साहस और अंधेरे पर प्रकाश की स्थायी जीत की कालातीत याद दिलाती है। भारत में बुने गए हर धागे के साथ, एक विरासत जीवित रहती है - देवताओं और राक्षसों का, बुनाई और आश्चर्य का एक मिथक, जो हमेशा समय के ताने-बाने में बुना जाता है। बुनाई की कला एक पवित्र उपहार बनी हुई है, जो सच्चे हृदय और दैवीय रूप से निर्देशित हाथों वाले लोगों को सौंपी गई है।

अपनी पौराणिक उत्पत्ति से परे, बुनाई भारतीय समुदायों के सामाजिक और महत्वपूर्ण रूप से आर्थिक ताने-बाने में गहराई से अंतर्निहित है। सदियों से, इसने अनगिनत कारीगरों और उनके परिवारों को आजीविका प्रदान की है, इस प्रकार यह कौशल जीविका और आर्थिक सशक्तीकरण के संसाधन के रूप में काम कर रहा है।

बुनाई की समृद्ध परंपरा सहस्राब्दियों पुरानी है। ऐतिहासिक रूप से, भारत में बुनाई का पता प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता (3300-1300 ईसा पूर्व) से लगाया जा सकता है, जहां कपास की खेती और कपड़ा उत्पादन के साक्ष्य मिले हैं। टेराकोटा

की मूर्तियां, मिट्टी के बर्तन और मुहरें जैसी पुरातात्विक खोजें जटिल बुने हुए कपड़ों में लिपटे व्यक्तियों को दर्शाती हैं, जो बुनाई तकनीक और कपड़ा शिल्प कौशल की गहरी समझ का संकेत देती हैं।

दुनिया का सबसे पुराना ज्ञात ग्रंथ- ऋग्वेद (1500-500 ईसा पूर्व), बुनाई के महत्व को और अधिक मजबूत करता है। ऋग्वेद में प्राचीन भारतीय समाज में वस्त्रों के महत्व पर जोर देते हुए बुनाई का भी उल्लेख किया गया है। बुनाई न केवल एक व्यावहारिक आवश्यकता थी, बल्कि इसका धार्मिक और रस्मी महत्व भी था क्योंकि अनुष्ठानों, प्रसाद, अर्पण और समृद्धि तथा हेसियत के प्रतीक के रूप में कपड़ों का उपयोग किया जाता था।

संरक्षण की यह परंपरा पूरे इतिहास में जारी रही है। बाद में, जैसे ही अचमेनिद साम्राज्य का भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में विस्तार हुआ, इसने क्षेत्र में फारसी रूपांकनों, तकनीकों और बुनाई परंपराओं को पेश करके सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की। मुगल साम्राज्य (1526-1857) ने भारतीय बुनाई का और अधिक विस्तार किया, विशेष रूप से ब्रोकेड, मलमल और मखमल जैसे शानदार वस्त्रों के विकास में। कलाओं के संरक्षक मुगल सम्राटों ने समृद्ध कपड़ा उद्योग को और बढ़ावा दिया। उन्होंने दरबारी पोशाकों और उपहारों के लिए उत्तम किस्म के कपड़ों को बढ़ावा दिया।

यूरोपीय प्रभाव ने भी इस अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 15वीं शताब्दी में यूरोपीय व्यापारियों और उपनिवेशवादियों के आगमन से महत्वपूर्ण परिवर्तन आये। भारतीय वस्त्रों, विशेष रूप से सूती और रेशमी कपड़ों की मांग ने कपड़ा विनिर्माण केंद्रों के विस्तार को बढ़ावा दिया और यूरोपीय व्यापार नेटवर्क की स्थापना की। इसके अलावा, औपनिवेशिक काल के दौरान मशीनीकृत करघों और सिंथेटिक रंगों की शुरूआत ने उत्पादन विधियों में और क्रांति ला दी, जिससे घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

शाही संरक्षण ने भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय शासक, नरेश, नवाब और राजा भी इसके उत्साही संरक्षक थे। उन्होंने कुशल बुनकरों की निरंतर मांग को सुनिश्चित करते हुए समारोहों, धार्मिक त्योहारों और दरबारी पोशाकों के लिए कपड़े तैयार करवाए। इस शाही संरक्षण के तहत बुनाई गिल्ड और कारीगर समुदाय फले-फूल और उन्होंने जटिल पैटर्न, रूपांकनों और अलंकरणों से सुसज्जित उत्कृष्ट वस्त्रों का उत्पादन किया।

बुनाई, अपनी इस समृद्ध विरासत को आगे बढ़ाते हुए और ऐतिहासिक जड़ों से आगे बढ़ते हुए, भारत की स्थायी सृजनात्मक भावना तथा सांस्कृतिक संचरण का एक शक्तिशाली प्रतीक बन

गई है। यह स्वयं को महज शिल्प कौशल से आगे बढ़ाकर एक जीवंत सामाजिक और सांस्कृतिक आधारशिला के रूप में विकसित करती है। गहरी जड़ें जमा चुकी यह परंपरा सहस्राब्दियों से देश की पहचान के साथ अटूट रूप से जुड़ी हुई है, जो विविध समुदायों के ताने-बाने में मूल्यों, विश्वासों और विरासत को समाहित करती है।

ताने और बाने की यह जटिल परस्पर क्रिया करघे से कहीं आगे तक फैली हुई है, जो जीवन की चक्रीय प्रकृति के लिए एक रूपक बन गई है। बुनाई की कला समाज के हर वर्ग के भारतीयों के दैनिक जीवन, विश्वासों, रीति-रिवाजों और परंपराओं से जुड़ी हुई है।

लोककथाओं और पौराणिक कथाओं के देवताओं और नायकों की शोभा बढ़ाने वाले जटिल परिधान शक्ति, स्थिति और पहचान के स्थायी प्रतीक के रूप में काम करते हैं। शुभ समारोहों के दौरान महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली आकर्षक साड़ियों से लेकर किसानों द्वारा पहने जाने वाले साधारण कपड़ों तक, बुनाई एक एकीकृत धागे के रूप में कार्य करती है, जो विविध भारतीय सांस्कृतिक मान्यताओं की परतों को एक साथ बांधता है।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी निखारे गए कौशल और तकनीकें यह सुनिश्चित करती हैं कि यह ज्ञान आगे बढ़ाया जाए, जिससे सम्मानित मास्टर बुनकरों की एक वंशावली तैयार होती है जिनकी विशेषज्ञता को उनके स्थाई मूल्यों के लिए सम्मान दिया जाता है। एक साथ बुने गए जटिल धागे परस्पर जुड़े हुए भारतीय समाज को प्रतिबिंबित करते हैं, जिनमें से प्रत्येक देश की सांस्कृतिक विरासत के जीवंत चित्रपट में योगदान देता है।

प्राचीन काल से चली आ रही भारत की बुनाई परंपराओं को प्रासंगिक बनाने से एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का पता चलता है। भारत में बुनाई अपनी प्राचीन उत्पत्ति से लेकर सदियों के सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से अपने विकास तक, परंपराओं, नवाचारों और प्रभावों की निरंतरता को दर्शाती है जो देश की अनूठी वस्त्र-परंपरा को आकार देती है।

देश भर में बुनाई की अलग-अलग शैलियां और तकनीकें उभरी हैं, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान को दर्शाती है। अपनी अनूठी शैलियों, तकनीकों और दार्शनिक आधारों के लिए प्रसिद्ध कुछ की सूची नीचे दी गई है:

बनारसी रेशम – बनारसी रेशम की बुनाई, अपनी भव्यता, सुंदरता और जटिल पैटर्न के लिए जानी जाती है जो भारतीय संस्कृति में 'श्रृंगार' (अलंकरण) की अवधारणा की प्रतीक है। मुगल कला और धातु के धागों के उपयोग से प्रेरित रूपांकनों में सुंदरता और अलंकरण पर जोर दिया गया है। अक्सर शादियों, त्योहारों और शुभ अवसरों से जुड़े ये शानदार कपड़े समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक हैं।

कांचीपुरम रेशम– कांचीपुरम रेशम बुनाई 'धर्म' की दार्शनिक अवधारणा से ओत-प्रोत है, जो धार्मिकता, कर्तव्य और सदाचार का प्रतिनिधित्व करती है। अपनी समृद्ध बनावट, जीवंत रंगों और सोने या चांदी के धागों से बुने गए विशिष्ट जरी बार्डर के लिए प्रसिद्ध, कांचीपुरम रेशम साड़ियां सूक्ष्म शिल्प कौशल का प्रमाण हैं। पारंपरिक पिटलूम और पीढ़ियों से चली आ रही तकनीकों का उपयोग करके, कुशल कारीगर इन श्रम-आधारित वस्त्रों का निर्माण करते हैं। अक्सर धार्मिक समारोहों और शुभ अवसरों के दौरान पहनी जाने वाली कांचीपुरम साड़ियां, इन्हें धारण करने वालों की परंपरा और नैतिक मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

पैठणी– पैठणी बुनाई 'लक्ष्य' की अवधारणा का प्रतीक है, जो आकांक्षा, लक्ष्य-निर्धारण और आध्यात्मिक उत्थान को दर्शाता है। अपनी जटिल बुनाई, जीवंत रंगों तथा मोर रूपांकनों (सुंदरता, उर्वरता और दैवीय सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करने वाली) के लिए पुरस्कृत, पैठणी साड़ियों को विलासिता का प्रतीक माना जाता है। पारंपरिक रूप से सोने या चांदी के धागों के साथ शुद्ध रेशम

से तैयार की गई, इन साड़ियों में एक अनूठी 'टेपेस्ट्री बुनाई' तकनीक इस्तेमाल होती है, जिसमें डिजाइन को कढ़ाई या छपाई करने के बजाय सीधे कपड़े में बुना जाता है।

गुजरात का पटोला शिल्प- गुजरात का पटोला शिल्प विशेष रूप से पटोला साड़ियां, 'वसुधैव कुटुंबकम' (दुनिया एक परिवार है) की अवधारणा का ज्वलंत उदाहरण है। डबल इकत बुनाई तकनीक का उपयोग करके तैयार किए गए, इन वस्त्रों में जटिल ज्यामितीय पैटर्न और रूपांकन हैं जो सद्भाव, संतुलन और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक हैं। पटोला साड़ियां गुजरात की सांस्कृतिक विविधता और सांप्रदायिक सद्भाव का प्रचार करती हैं, जो मतभेदों के बीच मानवता की एकता को दर्शाती हैं।

भारत की बुनाई परंपराएं, मात्र उपयोगितावादी शिल्प से दूर, सांस्कृतिक पहचान की बुनी हुई टेपेस्ट्री बन गई हैं। जैसे-जैसे ये परंपराएं आधुनिकता की धाराओं में आगे बढ़ती हैं, उनके संरक्षण और विकास में नई रुचि उनकी निरंतर जीवंतता सुनिश्चित करने का वादा करती है, जिससे वे कारीगरों और कपड़ा उत्साही लोगों की भावी पीढ़ियों को प्रेरित कर सकते हैं। हाल के वर्षों में पारंपरिक बुनकरों और समकालीन डिजाइनरों के बीच बढ़ते सहयोग ने भारतीय वस्त्रों और बुनाई समुदाय के परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से नया आकार दिया है।

पूरे भारत में पारंपरिक बुनाई समुदायों ने, बदलती बाजार मांगों, घटती कारीगर आबादी और बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्त्रों से प्रतिस्पर्धा के लिए खुद को ढालने के लिए लंबे समय से संघर्ष किया है। समकालीन डिजाइनरों के साथ सहकार्यता ने इन कारीगरों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने, अपनी शिल्प विरासत को संरक्षित करने और स्थायी आजीविका सुरक्षित करने के लिए एक बहुत जरूरी मंच प्रदान किया है। इस प्रकार का सहयोग पारंपरिक तकनीकों को आधुनिक डिजाइनों के साथ जोड़कर, पारंपरिक वस्त्रों को समकालीन उपभोक्ताओं के लिए प्रासंगिक बनाने में मदद करता है, जिससे उनका निरंतर अस्तित्व और विकास सुनिश्चित होता है।

इस पुनःस्थापन आंदोलन का नेतृत्व सब्यसाची मुखर्जी, अनिता डोंगरे, राहुल मिश्रा, हिमांशु शनि और अनीथ अरोड़ा जैसे प्रसिद्ध डिजाइनर कर रहे हैं। वे अपने कार्यों के माध्यम से भारत की कपड़ा विरासत के प्रति गहरा सम्मान और इसके संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। पारंपरिक कारीगरों के साथ सहयोग के माध्यम से, उन्होंने इन सदियों पुरानी परंपराओं में नई जान फूंक दी है।

उनका प्रभाव महज संरक्षण तक ही सीमित नहीं है। समकालीन सौंदर्यशास्त्र के प्रति अपनी गहरी नजर के कारण वे रंग, बनावट और डिजाइन के साथ प्रयोग करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक वस्त्रों की आधुनिक व्याख्याएं होती हैं जो वैश्विक दर्शकों को पसंद आती हैं। विचारों का यह पर-परागण न केवल कपड़ा डिजाइन में बल्कि उत्पादन विधियों में भी प्रयोग और नवीनता की भावना को बढ़ावा देता है, जिससे सम्मानित शिल्पों का निरंतर विकास सुनिश्चित होता है। डिजाइनर, नई सामग्रियों, बुनाई तकनीकों और रंगाई विधियों को पेश करके परंपरा की अखंडता के प्रति सम्मान बनाए रखते हुए नवीनता की भावना को बढ़ावा देते हैं।

पारंपरिक और आधुनिक तत्वों के मिश्रण से अद्वितीय और नवोन्मेषी कपड़ा निर्माण होता है जो वैश्विक अपील रखता है। ये सहयोग पारंपरिक समुदायों को कई तरीकों से सशक्त बनाते हैं। कारीगरों को नए बाजारों, डिजाइन विशेषज्ञता और व्यावसायिक अवसरों तक पहुंच प्राप्त होती है। इन भागीदारियों से आगे बढ़ाया गया यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान भारत की वस्त्र-परंपरा के लिए वैश्विक सराहना हासिल करता है। समकालीन सौंदर्यशास्त्र से ओत-प्रोत भारतीय वस्त्र अंतरराष्ट्रीय फैशन रनवे की शोभा बढ़ाते हैं और देश की सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि और विविधता का प्रदर्शन करते हैं।

इसके अलावा, नैतिक प्रथाएं और संधारणीयता प्रमुख विचार हैं। कई डिजाइनर यह सुनिश्चित करते हुए कि कारीगरों को उचित वेतन मिले और वे नैतिक परिस्थितियों में काम करें, निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को प्राथमिकता देते हैं। प्राकृतिक रेशों के लिए जैविक खेती को बढ़ावा देने और प्राकृतिक रंगों के उपयोग से, हानिकारक रसायनों पर निर्भरता कम होती है, पर्यावरण प्रदूषण कम होता है और पारंपरिक तकनीकों का संरक्षण होता

है। नैतिक सोर्सिंग पर्यावरण-अनुकूल सामग्रियों और प्रक्रियाओं तक फैली हुई है, जिससे अपशिष्ट में गिरावट आती है और संसाधनों की खपत भी कम होती है।

डिजाइनर केवल विरासत शिल्प को अपने काम में शामिल नहीं करते हैं, वे कारीगरों को भी सशक्त बनाते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं ज्ञान के आदान-प्रदान और तकनीकी उन्नयन की सुविधा प्रदान करती हैं, जिससे पारंपरिक बुनाई प्रथाओं की निरंतर प्रासंगिकता और प्रतिस्पर्धात्मकता सुनिश्चित होती है। कारीगरों को कौशल विकास और क्षमता-निर्माण के अवसर मिलते हैं, जिससे वे अपने उद्यमशीलता कौशल को बढ़ा सकते हैं और उभरते बाजार रुझानों के अनुकूल कार्य कर सकते हैं।

अपने नेटवर्क और प्लेटफार्मों का लाभ उठाकर, डिजाइनर इन समुदायों के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक बाजारों के दरवाजे खोलते हैं। वे इन कारीगरों की कलात्मकता का प्रदर्शन करते हैं, उनके काम को दर्शकों के सामने पेश करते हैं। इससे न केवल बिक्री बढ़ती है बल्कि बुनकर समुदायों के लिए आर्थिक स्थिरता और विकास के अवसरों को भी बढ़ावा मिलता है।

पीढ़ियों से चली आ रही पारंपरिक बुनाई तकनीकों को संरक्षित किया जाता है और भविष्य की पीढ़ियों तक उनके प्रसारण को सुनिश्चित किया जाता है। हाल के वर्षों में, इन वस्त्रों के लिए वैश्विक स्तर पर मिली सराहना ने भारत की बुनाई-परंपरा के महत्व को मजबूत किया है, जिससे बुनाई समुदायों के भीतर गौरव और पहचान को बढ़ावा मिला है। आपसी सम्मान, निष्पक्षता और पर्यावरणीय जिम्मेदारी से चिह्नित डिजाइनरों और पारंपरिक बुनकरों के बीच भागीदारी ने इस विरासत की परिवर्तनशीलता और जीवंतता को बढ़ाया है।

ये सहयोग भारतीय वस्त्रों की शाश्वत सुंदरता और शिल्प कौशल को विकसित करते हैं और इस क्षेत्र को पनपने में सहायता करते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए देश की समृद्ध बुनाई परंपराओं की स्थिरता सुनिश्चित होती है। भारत में बुनाई न केवल शिल्प से कहीं अधिक का प्रतीक है, बल्कि यह देश की परंपराओं, इतिहास और मूल्यों का भी प्रतीक है। यह अपने लोगों की सरलता, सृजनात्मकता और परिवर्तनशीलता के प्रमाण के रूप में खड़ा है, जो अतीत, वर्तमान और भविष्य के धागों को एक कालातीत ताने-बाने में पिरोता है और भारत की पहचान को आकार देता है। ❑

कृपया ध्यान दें

मई 2024 अंक अब उपलब्ध...

साहित्य जगत की रोचक सामग्री के साथ...

आज ही पुस्तक विक्रेता से
आजकल (हिन्दी) खरीदें।
सदस्य बनने के लिए
क्यू आर कोड स्कैन करें।

भारतीय बुनाई के स्थायित्व को प्रोत्साहन

ललित कुमार गुप्ता | अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड। ईमेल: cmd@cotcorp.com

आज विश्व एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में संधारणीयता को अपना रहा है, भारतीय बुनाई का महत्व केवल बढ़ा है और इस आंदोलन में सबसे आगे भारतीय कपास निगम (सीसीआई) है जो कपास की खेती और बुनाई कार्यों की स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग करके एंड-टू-एंड ट्रैसेबिलिटी के साथ 'कस्तूरी कॉटन भारत' ब्रांड की शुरूआत एक अभूतपूर्व पहल है, जो कॉटन वस्त्र मूल्य श्रृंखला में पारदर्शिता के लिए एक नया मानक स्थापित कर रही है ताकि भारतीय कपास के मूल्य निर्धारण में सुधार हो और पारंपरिक शिल्प कौशल को विलासिता (लग्जरी) से जोड़कर भारत की समृद्ध वस्त्र विरासत को बढ़ावा दिया जा सके।

भारत में कपास का बहुत महत्व है, न केवल एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक फसल के रूप में बल्कि देश की समृद्ध वस्त्र विरासत के प्रतीक और परंपरा, कलात्मकता और स्थिरता के प्रतीक के रूप में भी। सदियों से चली आ रही समृद्ध विरासत के साथ, भारतीय बुनाई ने न केवल लाखों लोगों की शोभा बढ़ाई है, बल्कि विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका भी कायम रखी है।

भारत के पास हजारों वर्ष पुरानी बुनाई परंपराओं की एक समृद्ध विरासत है। देश के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट बुनाई परंपरा है, जिनमें अद्वितीय तकनीकों, रूपांकनों और सामग्रियों की विशेषता है। बनारस के जटिल ब्रोकेड से लेकर तेलंगाना के आकर्षक इकत तक, भारतीय वस्त्रों की उनके अद्वितीय शिल्प कौशल और कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए सराहना की जाती है।

स्थायित्व की तलाश में भारतीय बुनाई को जो चीज अलग करती है, वह है उनकी अंतर्निहित पर्यावरण अनुकूलता। परंपरागत रूप से, भारतीय बुनकर कपास, रेशम, जूट और ऊन जैसे प्राकृतिक रेशों पर भरोसा करते हैं, जो उन्हें स्थानीय रूप से प्राप्त होते हैं और उन्हें सदियों पुरानी तकनीकों का उपयोग करके संसाधित किया जाता है जिनका पर्यावरण पर न्यूनतम

आइए हमारे देश के बेहतरीन हथकरघा उत्पादों को खरीदकर अपने बुनकरों को प्रोत्साहित करें और नीचे दिए गए हैशटैग के साथ पूरी दुनिया में साझा करके उन्हें बढ़ावा दें।

#myhandloommypride

प्रभाव पड़ता है। ये फाइबर प्रदूषण और संसाधन की कमी में योगदान देने वाले सिंथेटिक विकल्पों के विपरीत, बायोडिग्रेडेबल, नवीकरणीय और जैव विविधता में सहयोग देते हैं।

इसके अलावा, पारंपरिक भारतीय बुनाई प्रथाएं स्थानीय समुदायों में गहराई से व्याप्त हैं, जो सामाजिक एकजुटता और आर्थिक सशक्तीकरण की भावना को बढ़ावा देती हैं। देश भर में फैले बुनाई समूह अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां वैकल्पिक रोजगार के अवसर दुर्लभ होते हैं, लाखों कारीगरों को आजीविका प्रदान करते हैं। भारतीय बुनाई का समर्थन करके, उपभोक्ता न केवल स्थायी फैशन में निवेश करते हैं बल्कि पारंपरिक शिल्प के संरक्षण और कारीगर समुदायों के कल्याण में भी योगदान देते हैं।

आज, विश्व एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्थिरता को अपना रहा है, भारतीय बुनाई का महत्व केवल बढ़ा है और इस आंदोलन में सबसे आगे भारतीय कपास निगम (सीसीआई) है जो कपास की खेती और बुनाई कार्यों की स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सीसीआई देश में कपास किसानों के आर्थिक हितों की रक्षा के लिए कपास के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य संचालन करने के लिए एक केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है। यह पहल कपास किसानों के लिए एक ढाल के रूप में कार्य करती है, विशेष रूप से बाजार में अस्थिरता के समय में, शोषण को रोकती है और उनके लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करती है। हालांकि, स्थिरता के लिए सीसीआई की प्रतिबद्धता कपास किसानों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करने से कहीं आगे तक है, और इस प्रयास में यह इसमें एक अग्रणी शक्ति के रूप में उभरी है जो भारतीय बुनाई को बढ़ावा देने के जरिए स्थिरता को बढ़ावा देने के प्रयासों का नेतृत्व कर रही है।

भारतीय बुनाई के कई गुणों के बावजूद, स्थिरता की दिशा में उनकी यात्रा में चुनौतियां बनी रहती हैं। बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्त्रों से प्रतिस्पर्धा, बुनियादी ढांचे की कमी और युवा पीढ़ी के बीच घटती रुचि पारंपरिक बुनाई समुदायों के लिए महत्वपूर्ण खतरा पैदा करती है। हालांकि, ये चुनौतियां नवाचार और सहयोग के अवसर भी प्रस्तुत करती हैं। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर, कौशल विकास में निवेश करके और हितधारकों के साथ साझेदारी को बढ़ावा देकर, भारतीय बुनकर बाधाओं को दूर कर सकते हैं और तेजी से बदलती दुनिया में आगे बढ़ सकते हैं। स्थानीय कपड़ा और हस्तशिल्प व्यवसायों का समर्थन करने के लिए, सीसीआई सबसे आगे रहा है और वह इसकी शाखाओं के अधिकार क्षेत्र के साथ-साथ कॉर्पोरेट कार्यालय के अंतर्गत अपने सभी सम्मानित खरीददारों, कर्मचारियों और अन्य हितधारकों को बुनकरों, कारीगरों और स्थानीय तथा छोटे व्यवसायों के माध्यम से उपहार की वस्तुएं खरीदने के लिए प्रोत्साहित करता है। ये प्रयास एक ओर भारत के स्वदेशी शिल्प को संरक्षित करने के प्रयासों को मजबूत करने और दूसरी ओर देश में पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे हैं।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) के साथ रणनीतिक सहयोग में, सीसीआई ने स्थिरता पर अपने प्रभाव को बढ़ाया है। केवीआईसी, भारतीय राष्ट्रीय ध्वज बनाने के लिए अधिकृत एकमात्र वैधानिक इकाई है, जो अपनी कपास आपूर्ति के लिए सीसीआई पर निर्भर है। दैनिक ई-नीलामी के माध्यम से प्रतिस्पर्धी शर्तों की पेशकश करके, सीसीआई यह सुनिश्चित करती है कि केवीआईसी इकाइयां अपने कच्चे कपास की निरंतर खरीद करें। इस प्रकार, देश भर में फहराया गया प्रत्येक तिरंगा सीसीआई के सतत कार्यों द्वारा सन्निहित देशभक्ति के उत्साह का प्रमाण है।

ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग करके एंड-टू-एंड ट्रैसेबिलिटी के साथ 'कस्तूरी कॉटन भारत' ब्रांड की शुरूआत एक अभूतपूर्व पहल है, जो कॉटन वस्त्र मूल्य श्रृंखला में पारदर्शिता के लिए एक नया मानक स्थापित कर रही है ताकि भारतीय कपास के मूल्य निर्धारण में सुधार हो और पारंपरिक शिल्प कौशल को विलासिता (लग्जरी) से जोड़कर भारत की समृद्ध वस्त्र विरासत को बढ़ावा दिया जा सके।

जैसे-जैसे दुनिया पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रही है, सीसीआई द्वारा की गई पहल आशा की किरण के रूप में काम करती है। परंपरा को नवीनता और स्थिरता के साथ जोड़कर, सीसीआई न केवल भारतीय बुनाई की समृद्ध विरासत को संरक्षित करता है बल्कि एक उज्ज्वल, हरित भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करता है। साझेदारी अभियानों और स्थानीय कारीगरों के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से सीसीआई ने भारतीय शिल्प कौशल के हर धागे में स्थिरता को बढ़ावा देने की परिवर्तनकारी शक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया है। ❑

गुजरात के शिल्प और बुनकर

आरोहीबेन पटेल | भारतीय सूचना सेवा की अधिकारी एवं अहमदाबाद के केंद्रीय संचार ब्यूरो में उपनिदेशक।
ईमेलः arohiben.patel@gov.in

भारत के पश्चिमी भाग में स्थित गुजरात अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए ही नहीं बल्कि अपने उत्कृष्ट वस्त्रों और बुनकरी शिल्पकला की गौरवपूर्ण परम्परा के लिए भी जाना जाता है। इस लेख में गुजरात की सज्जापूर्ण बुनकरी और चित्ताकर्षक वस्त्रों के बारे में व्यापक जानकारी दी गई है तथा विशेषकर कच्छ की भुजोड़ी बुनकरी कला, अहमदाबाद की आशावली साड़ियों, मशरू वस्त्रों और पटोला सिल्क साड़ियों पर विशेष फोकस रखा गया है।

गुजरात सदियों से विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संगम-स्थल रहा है और ये सभी परम्पराएं राज्य की जीवन्त टेपेस्ट्री विद्या के विकास और विस्तार में योगदान करती रही हैं। गुजरात में बनाए जा रहे अनेकानेक प्रकार के वस्त्रों के निर्माण में कुछ विशिष्ट बुनकर अपनी भव्य शिल्पकला, अनूठे डिजाइन और ऐतिहासिक महत्व के लिए अलग ही पहचान रखते हैं।

भुजोड़ी बुनकरी: कच्छ की परम्परागत धरोहर को संजोते हुए

कच्छ के शुष्क इलाके में बसा छोटा-सा गाँव भुजोड़ी बुनकरी की परम्परागत तकनीकों और भव्य सजावटी वस्त्रों का पर्याय बन चुका है। यहां के दस्तकार हथकरघा बुनकरी में महारत के लिए जाने जाते हैं तथा वस्त्रों की व्यापक रेंज तैयार करते हैं जिनके डिजाइनों में इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर की भरपूर छाप दिखाई देती है।

भुजोड़ी बुनकरी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें स्थानीय तौर पर उपलब्ध सामग्री इस्तेमाल की जाती है, जैसे- भेड़ की ऊन और ऊंट के बाल। इन्हें बहुत खूबसूरती के साथ आकर्षक डिजाइनों वाले फैब्रिक (वस्त्रों) की बुनाई में प्रयोग किया जाता है। भुजोड़ी के दस्तकार (हस्तशिल्पी) पीढ़ियों से चली आ रही परम्परागत तकनीकें अपनाते हैं और गड्ढों में फिट किए जाने वाले करघों के माध्यम से सुन्दर वस्त्र बुनते हैं जो देखने में अद्भुत तथा बेहद मजबूत और टिकाऊ होते हैं।

भुजोड़ी बुनकरी में ज्यामितीय आकारों के पैटर्न, चमकीले रंग और बारीकी से बनाए बेहतरीन डिजाइनों से विशेष निखार

लाया जाता है जो कच्छ के प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रेरित रहते हैं। भुजोड़ी में बनाए जाने वाले कम्बलों, शॉलों और दीवारों पर टांगी जाने वाली हैंगिंग, सभी में इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर और कलात्मक परम्परा परिलक्षित होती है।

बाजार के बदलते ट्रेंड (चलन) और मशीन से निर्मित वस्त्रों की ओर से लगातार बढ़ती स्पर्धा जैसी चुनौतियों के बावजूद भुजोड़ी के शिल्पकार अपनी कला के स्वरूप को संजोए रखने और उसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने के प्रति पूरी तरह संकल्पबद्ध हैं। भुजोड़ी बुनकरी को प्रोत्साहन देते रहने के उद्देश्य से चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों और बाजार में पैठ बढ़ाने के अभियानों की मदद से इस क्षेत्र की अनूठी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में लोगों में जागरूकता लाने और स्थानीय समुदाय के लिए आर्थिक अवसर उपलब्ध कराने में सफलता मिलती है।

आशावली साड़ियां : अहमदाबादी शैली का अनुपम सौन्दर्य

भीड़भाड़ वाले और हलचल भरे शहर अहमदाबाद में तंग रास्तों और प्राचीन स्मारकों के बीच में ही आशावली साड़ियों की समृद्ध परम्परा पनप रही है। अपनी कभी कम न होने वाली खूबसूरती और शानदार कलात्मक कारीगिरी के लिए प्रसिद्ध आशावली साड़ियां सदियों से विलासिता और ऐश्वर्य का प्रतीक मानी जाती हैं।

आशावली साड़ियों का इतिहास मुगल काल से जुड़ा माना जाता है जब बुनकरी की यह हस्तकला शाही प्रश्रय में पनप रही थी। अहमदाबाद के कारीगरों ने हथकरघा बुनकरी की कला में निपुणता हासिल कर ली थी, वे रेशमी और सूती धागों के मेल से ताना बुनकर बहुत ही बारीक और सुन्दर डिजाइन तैयार करते थे जो कुलीन और अभिजात्य वर्गों की महिलाओं की साड़ियों (परिधानों) की शोभा बनते थे।

आशावली साड़ियां बुनकरी की विशेष तकनीकों - कड़वा (ब्रोकेडिंग), जाल (ओपन वर्क) और बूटा (मॉटिफ़वर्क) के कारण ही सबसे भिन्न मानी जाती हैं। प्रत्येक साड़ी में दस्तकारी की उत्कृष्टता परिलक्षित होती है और हर साड़ी अपने-आप में मास्टरपीस होती है। इनका एक-एक धागा सिद्धहस्त बुनकर पूरी बारीकी से बुनते हैं, तभी ऐसे अद्भुत नमूने और डिज़ाइन बनकर उभरते हैं।

आशावली साड़ियों में इस्तेमाल किए जाने वाले बूटे (मॉटिफ) अधिकतर प्रकृति, फूलों, पैस्ले के घुमावदार डिजाइन और ज्यामितीय आकृतियों पर आधारित होते हैं। प्रखर चमकीले रंगों के मेल और श्रेष्ठ फैब्रिक (कपड़ों) के इस्तेमाल से इन साड़ियों की सजधज विशेष निराली लगती है तथा शानदार साड़ियों की कद्र करने वालों में इन्हें सबसे ज्यादा पसन्द किया जाता है।

बुनकरी की आधुनिक तकनीकें विकसित होने के बावजूद अहमदाबाद के दस्तकार आशावली साड़ियों की परम्परा को जीवित रखने के लिए पूरी लगन और निष्ठा से लगातार कार्यरत हैं। ये कारीगर परम्परागत तकनीकों और समकालीन डिजाइनों के समन्वयन से ऐसी साड़ियां तैयार करते आ रहे हैं जो हर अवसर और हर फैशन के लिए अनुकूल होती हैं।

मशरू कपड़ा : रेशम और सूत का सम्मिश्रण

मशरू कपड़ा रेशम और सूत के अनूठे सम्मिश्रण से बनाया जाता है जिसे गुजरात के हिन्दू और मुस्लिम समुदाय में परम्परागत ढंग से इस्तेमाल किया जाता है। मशरू वस्त्र (फैब्रिक) की विशेषता उसके निराले चेकरबोर्ड पैटर्न हैं तथा रेशमी और सूती धागों से ताना-बाना तैयार किया जाता है। इन धागों के सादगीपूर्ण मेल से ऐसा कपड़ा बनाया जाता है जो देखने में अत्यन्त खूबसूरत होता है तथा टिकाऊ और शानदार दिखता है तथा विविध परिधान और अन्य सजावटी सामग्री बनाने के लिए सबसे उपयुक्त रहता है।

कभी पहले के समय में मशरू समूचे गुजरात राज्य में लोकप्रिय था परन्तु अब तो गिनेचुने कारीगर ही इसके उत्पादन में रह गए हैं जिससे यह कपड़ा दुर्लभ हो गया है तथा इसकी मांग भी बहुत बढ़ गई है। मशरू बनाने की कला को जीवित रखने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों में कारीगरों को प्रशिक्षण देने और आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के साथ ही इस अनूठी कलात्मक विधा के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर ध्यान देना मुख्य रूप से शामिल है।

पटोला सिल्क साड़ियां : लालित्य की पराकाष्ठा

पटोला सिल्क साड़ियों का उल्लेख किए बिना गुजरात के वस्त्रों और बुनकरी विधा की व्याख्या पूरी नहीं होगी। पाटन क्षेत्र से शुरू हुई पटोला सिल्क साड़ियां अपनी दोहरी एकल बुनकर तकनीक के लिए खासतौर पर मशहूर हैं; इस तकनीक में ताने और बाने को बुनने से पहले ही डाई किया (रंगा) जाता है जिससे जादुई ज्यामितीय पैटर्न कपड़े पर नाचते से दिखते हैं।

एक पटोला साड़ी बनाने में कई महीने या एक साल तक का वक्त लग जाता है क्योंकि एक-एक बूटे को सिद्धहस्त दस्तकार पूरे मनोयोग से तैयार करते हैं। पटोला सिल्क की एक बड़ी खूबी यह है कि इसे पलटकर दोनों तरफ से पहना जा सकता है। दोनों तरफ इनका डिजाइन हूबहू एक जैसा होता है और इन्हें 'रिवर्सिबल' भी कहा जाता है। इनमें वास्तव में बुनकरों की उंगलियों का जादू और उनके कार्यकौशल की अद्‌भुत छवि देखी जा सकती है।

पुराने इतिहास के अनुसार पटोला सिल्क साड़ियां केवल राजसी और अभिजात्य वर्गों की महिलाएं ही पहनती थीं परन्तु अब ये सजधज और सजावट का विशेष प्रतीक बन चुकी हैं तथा इनकी गणना श्रेष्ठतम वस्त्रों में की जाती है। इन्हें बनाने में लगने वाली मेहनत और लगन के बावजूद पटोला सिल्क साड़ियों की मांग लगातार बढ़ रही है तथा शिल्पकार परम्परागत डिजाइनों को आधुनिक रुचि के अनुरूप ढालने में लगे हैं।

गुजरात की दुर्लभ बुनकरी और वस्त्रकला मात्र वस्त्र ही नहीं हैं बल्कि उन सिद्धहस्त दस्तकारों की दक्षतापूर्ण कारीगरी, कलात्मक विशेषता और राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का जीवन्त प्रतीक हैं। भुजोड़ी बुनकरी के कलात्मक पैटर्न से लेकर आशावली साड़ियों और पटोला सिल्क साड़ियों तक प्रत्येक वस्त्र वहां की समृद्ध परम्परा, नवाचार और अद्‌भुत सजधज की अनूठी कहानी कहता लगता है। ❑

खादी: भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक

ए अन्नामलाई

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली के निदेशक और एक प्रसिद्ध गांधीवादी विद्वान।
ईमेल: nationalgandhimuseum@gmail.com

खादी भावना का अर्थ है पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक प्राणी के साथ मैत्री भाव रखना। इसका अर्थ है अपने साथी प्राणियों को नुकसान पहुंचाने वाली हर चीज़ का पूर्ण त्याग और अगर हम अपने लाखों देशवासियों के बीच उस भावना को विकसित कर सकें तो हमारा यह भारत कैसा होगा!
(सीडब्ल्यूएमजी, खंड 34, पृष्ठ 520)

1917 में चंपारण सत्याग्रह के दौरान गांधीजी को बिहार के किसानों की दुर्दशा का सामना करना पड़ा। भीलवाड़ा गाँव में उनकी मुलाकात एक महिला से हुई और उनसे चर्चा के दौरान उन्हें एहसास हुआ कि वह अपनी साड़ी सिर्फ इसलिए नहीं बदल पा रही थी क्योंकि उसके पास दूसरी साड़ी नहीं थी। वह पौधा जो कपड़ों को नीले रंग में रंगने का स्रोत है, चंपारण सत्याग्रह का केंद्रीय मुद्दा था और वही कपड़ा किसानों के लिए एक महंगी वस्तु थी। अतीत में एक समय, हम शीर्ष कपास उत्पादकों में से एक थे। लेकिन हमारे किसान कपास से बने उसी उत्पाद से वंचित रह गए। कपास कच्चे माल के रूप में इंग्लैंड गया और फिर मैनचेस्टर और लैंकाशिर से कपड़े के रूप में तैयार उत्पाद के रूप में भारत वापस आया।

गांधीजी भी ऐसी जगह से आए थे जहां कताई और बुनाई की संस्कृति प्रचलित थी। ईस्ट इंडिया कंपनी के भारतीय उपमहाद्वीप के बाजार पर नियंत्रण पाने के बाद, चीजें काफी बदल गई। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए, अंग्रेजी शासकों ने भारतीय ग्रामीण लोगों की कपड़ा संस्कृति को नष्ट कर दिया।

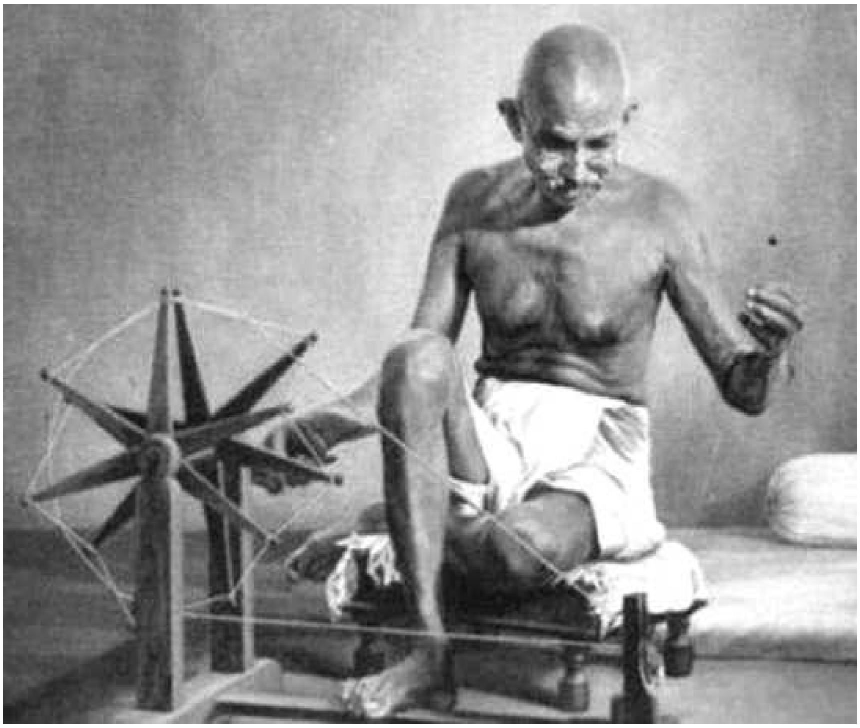

गौरव-हाथ से काते गए, हाथ से बुने हुए कपड़े को जबरन ख़त्म होने दिया गया और इसके साथ ही, बहुमूल्य पारंपरिक वस्त्र ज्ञान के विशाल भंडार भी गायब हो गए।

पारंपरिक वस्त्र ज्ञान

भारत के नील-रंगे सूती इकत को फिरौन के मकबरे में पाया गया था, गुलाबी मजीठ का कपड़ा मोहनजो-दारो स्थल पर तकलियों के साथ पाया गया था, ग्रीक और रोमन व्यापारियों के खातों में भारतीय उपमहाद्वीप के बढ़िया कपड़ों का वर्णन किया गया है। अजंता और एलोरा पेंटिंग, टेक्सटाइल सामग्री में विभिन्न डिजाइन और शैलियों को दर्शाती हैं। भारत के प्रत्येक भाग में कपड़ा डिज़ाइन की अपनी शैली थी - बुनाई, रंगाई, छपाई आदि के दौरान डिज़ाइन। कपड़े की गुणवत्ता भी क्षेत्र-दर-क्षेत्र भिन्न होती थी। वास्तव में, हम कपड़ा प्रौद्योगिकी की कला में अग्रणी रहे हैं।

भारत का कपड़ा देश की आन-बान और शान था और यहां तक कि कुछ देशों ने भारत से कपड़े के आयात पर प्रतिबंध भी लगा दिया था! हमारे कपड़ों ने कई देशों के राजघरानों को सजाया। ये भी हाथ से काते और हाथ से बुने हुए कपड़े थे, अतीत की खादी!

औद्योगिक क्रांति ने अपना भयावह जाल फैलाया और इंग्लैंड में पावर-लूम उद्योगों ने भारतीय वस्त्रों को नष्ट कर दिया। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति के अनुरूप नए अधिनियमित कानूनों ने एक नई व्यापार प्रथा का मार्ग प्रशस्त किया। भारत में उगाई जाने वाली सभी कपास को बहुत कम कीमतों पर इंग्लैंड को निर्यात किया जाना होता था, जबकि ब्रिटिश मिल के कपड़े ने भारतीय बाजारों में बाढ़ ला दी थी।

लाखों-करोड़ों भारतीय स्पिनर और बुनकर बेरोजगार हो गए और उन्हें सचमुच सड़कों पर फेंक दिया गया। भारत के

खादी आंदोलन

जैसा कि गांधी जी ने कहा था- "1908 में लंदन में ही मैंने पहिए की खोज की थी। मैं दक्षिण अफ्रीका से एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए वहां गया था। तभी मैं कई समर्पित भारतीय छात्रों और अन्य लोगों के सन्निकट आया। हमारी भारत की स्थिति के बारे में कई लंबी चर्चाएं हुई थीं और मैंने एक झटके में देख लिया कि चरखे के बिना कोई स्वराज नहीं है। उसी समय मैंने जाना कि हर किसी को कातना होगा, लेकिन तब मुझे करघे और पहिये के बीच का अंतर पता नहीं था, और हिंद स्वराज में करघा शब्द का इस्तेमाल किया गया था मतलब पहिया।'' (सीडब्ल्यूएमजी, खंड 37, पृष्ठ 288)

जैसा कि गोखले ने सुझाव दिया था, गांधी ने भारतीय लोगों की स्थितियों का प्रत्यक्ष अनुभव लेने के लिए भारत का दौरा किया। उन्होंने गाँवों की बदहाली को साक्षात् देखा। किसान लगभग आधे वर्ष तक रोजगार से बाहर रहे। चंपारण की घटना ने भी उनकी भावनाओं को तीव्र कर दिया और वह किसानों के लिए एक पूरक व्यवसाय की पहचान करना चाहते थे जो लाभकारी रोजगार के लिए उनके समय और ऊर्जा का उपयोग करने में मदद करेगा। उनके मन में कताई-बुनाई का ख्याल आया। उन्होंने अहमदाबाद के कपड़ा मिल मालिकों के सहयोग से आश्रम में बुनाई की शुरुआत की। इस प्रक्रिया ने फिर से भारतीय उद्योगों को समर्थन दिया और किसानों को सीधे लाभ नहीं पहुंचाया। गांधी जी ने ब्रोच में दूसरे गुजरात शिक्षा सम्मेलन में एक ऊर्जावान महिला, गंगाबहन मजूमदार से मुलाकात की और उन्हें कताई के पारंपरिक तरीके और उसके उपकरणों का पता लगाने का काम सौंपा। भारत में यही स्थिति थी!

"आखिरकार, गुजरात में भटकने के बाद ही, गंगाबहन को बड़ौदा राज्य के विजापुर में चरखा मिला। वहां बहुत से लोगों के पास अपने घरों में चरखा था, लेकिन उन्होंने लंबे समय से उन्हें बेकार लकड़ी के रूप में छतों पर रख दिया था। उन्होंने गंगाबहन को कताई फिर से शुरू करने की तैयारी की अपनी बात बताई बशर्ते कि कोई उन्हें सिलवटों की नियमित आपूर्ति

प्रदान करने और उनके द्वारा काते गए सूत को खरीदने का वादा करे। (सीडब्ल्यूएमजी, खंड 39, पृष्ठ 391)

उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना प्रज्वलित की और खादी को राष्ट्रीयता का प्रतीक बनाया। उन्होंने, खादी आंदोलन के माध्यम से, औपनिवेशिक शोषण की नींव पर प्रहार करने के लिए अपने अहिंसक हथियार को तैनात किया!

हाथ से कताई और हाथ से बुनाई का पुनरुद्धार गांधीजी ने अपने भरोसेमंद दोस्तों जैसे गंगाबहन, मगनलाल गांधी और अन्य आश्रम मित्रों के माध्यम से किया था। खादी का परीक्षण सबसे पहले आश्रमवासियों के बीच किया गया और बाद में गांधीजी ने इसे देशव्यापी आंदोलन के रूप में आगे ले जाने का निर्णय लिया।

गांधी ने एक नए 'ब्रांड नाम' खादी के तहत हाथ से बुने हुए कपड़े का नया टुकड़ा पेश किया। उन्होंने खादी को दार्शनिक आधार भी दिया।

स्वदेशी की भावना

"खद्दर स्वदेशी का ठोस और केंद्रीय तथ्य है। खद्दर के बिना स्वदेशी, जीवन के बिना एक शरीर, जो केवल एक सम्माननीय दफन या दाह संस्कार के लिए उपयुक्त है, की तरह है। खद्दर एकमात्र स्वदेशी कपड़ा है। यदि किसी को भाषा और शब्दों में स्वदेशी की व्याख्या करनी है तो, इस देश के लाखों लोगों के लिए, खद्दर स्वदेशी में एक महत्वपूर्ण चीज़ है जैसे कि जिस हवा में हम सांस लेते हैं, वह महत्वपूर्ण है, स्वदेशी की कसौटी स्वदेशी के नाम से उपयोग की जाने वाली किसी वस्तु के उपयोग की सार्वभौमिकता नहीं है, बल्कि ऐसी वस्तुओं के उत्पादन अथवा निर्माण में भागीदारी की सार्वभौमिकता है। इस प्रकार, मिल-निर्मित कपड़ा केवल एक सीमित अर्थ में स्वदेशी माना जाता है क्योंकि इसके निर्माण में केवल भारत के लाखों लोगों में से बहुत ही कम लोग भाग ले सकते हैं जबकि खद्दर के निर्माण में लाखों लोग भाग ले सकते हैं। (यंग इंडिया, 17-6-1926)

उसके पास स्वदेशी आंदोलन के पुनरुद्धार का आधार था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उनके देशवासियों को विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करना चाहिए। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना प्रज्वलित की और खादी को राष्ट्रीयता का प्रतीक बनाया। उन्होंने, खादी आंदोलन के माध्यम से, औपनिवेशिक शोषण की नींव पर प्रहार करने के लिए अपने अहिंसक हथियार को तैनात किया।

उन्होंने विकेंद्रीकृत पैटर्न में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के कार्यक्रम के हिस्से के रूप में खादी का प्रस्ताव रखा। यह स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बन गया। उन्होंने

खादी आंदोलन को लोकप्रिय बनाने के लिए देश भर का दौरा किया।

खादी अर्थशास्त्र

खादी आंदोलन ने ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं के सशक्तीकरण का मार्ग भी प्रशस्त किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की बड़ी संख्या में भागीदारी का एक बड़ा कारण निश्चित रूप से खादी आंदोलन था।

उन्होंने कहा, "लाखों ग्रामीणों के लिए खादी ही एकमात्र सच्चा आर्थिक प्रस्ताव है, जब तक कि सोलह वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक सक्षम व्यक्ति, पुरुष या महिला, के लिए भारत के प्रत्येक गाँव में अपने खेत, कोटेज या यहां तक कि कारखाने के लिए काम की आपूर्ति और पर्याप्त मजदूरी की बेहतर व्यवस्था नहीं हो जाती या जब तक गाँवों को विस्थापित करने के लिए पर्याप्त शहर नहीं बनाए जाते हैं ताकि ग्रामीणों को आवश्यक आराम और सुविधाएं मिल सकें जो एक सुव्यवस्थित जीवन के लिए आवश्यक है और इसका उन्हें अधिकार है। मुझे केवल यह दिखाने के लिए प्रस्ताव को पूरी तरह से बताने का अधिकार है कि खादी को किसी भी लंबे समय तक इस क्षेत्र में बने रहना चाहिए जिसके बारे में हम सोच सकते हैं। (खादी - क्यों और कैसे, पृष्ठ 35)

उत्पादन की विकेन्द्रीकृत प्रणाली से निश्चित रूप से आय का समान वितरण होगा। राजाजी ने कहा, "आप इसका उत्पादन करने के बाद धन को समान रूप से वितरित नहीं कर सकते। आप लोगों को इसके लिए सहमत करने में सफल नहीं होंगे। लेकिन आप समृद्धि तभी ला सकते हैं जब उसके उत्पादन से पहले उसका समान वितरण सुनिश्चित कर सकें। यही खादी है।''

"खादी गाँव के सौर मंडल का सूर्य है। विभिन्न उद्योग ग्रह हैं जो खादी की ऊष्मा और उससे मिलने वाली जीविका के बदले में समर्थन दे सकते हैं। इसके बिना, अन्य उद्योग विकसित नहीं हो सकते। लेकिन अपने पिछले दौरे के दौरान मुझे पता चला कि, अन्य उद्योगों के पुनरुद्धार के बिना, खादी आगे प्रगति नहीं कर सकती है। गाँवों को अपना खाली समय लाभप्रद रूप से व्यतीत करने में सक्षम होने के लिए, ग्रामीण जीवन के सभी पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए। (हरिजन, 16-11-1934)

स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक

चरखा स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक बन गया और खादी राष्ट्रवाद की पहचान बन गई। भारत ने औपनिवेशिक सत्ता से जनशक्ति की ओर एक बड़ा बदलाव देखा। इस देश में एक समय आम लोग पुलिसकर्मियों से डरते थे लेकिन गांधीजी की अहिंसक रणनीति की शुरुआत के साथ, पुलिसकर्मी 'खादी लोगों' से डरने लगे। विशुद्ध रूप से एक आर्थिक गतिविधि एक शक्तिशाली राजनीतिक हथियार बन गई।

कपास पर्यावरण के अनुकूल है, हमारे मौसम की स्थिति के लिए उपयुक्त है, त्वचा और शरीर के लिए अच्छा है और एक प्राकृतिक उत्पाद है। यह मिल-निर्मित सहित सभी कपास उत्पादों पर लागू होता है। लेकिन उत्पादन, वितरण और खपत के स्तर पर परीक्षण होंगे। खादी के लिए, उत्पादक के अनुकूल उपयुक्त तकनीक के साथ उत्पादन स्वयं पर्यावरण-अनुकूल होगा। विकेंद्रीकृत उत्पादन से जनता को आय के वितरण में भी मदद मिलेगी जिसके माध्यम से हम लोगों की क्रय शक्ति बढ़ा सकते हैं। ❑

(अक्तूबर, 2016 के योजना अंक से पुनः प्रस्तुत)

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नई दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड	110003	011-24367260
नवी मुंबई	701, सी-विंग, केन्द्रीय सदन, बेलापुर	400614	022-27570686
कोलकाता	8, एस्प्लेनेड ईस्ट	700069	033-22488030
चेन्नई	'ए' विंग, राजाजी भवन, बेसेंट नगर	600090	044-24917673
तिरुवनंतपुरम	प्रेस रोड, गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471-2330650
हैदराबाद	कमरा सं. 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवाड़ीगुड़ा, सिकंदराबाद	500080	040-27535383
बेंगलुरू	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला	560034	080-25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612-2675823
लखनऊ	हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, सेक्टर-एच, अलीगंज	226024	0522-2325455
गुजरात	4-सी, नेप्च्यून टावर, चौथी मंजिल, आश्रम रोड, अहमदाबाद	380009	079-26588669
गुवाहाटी	असम खादी एंड विल्लेज इंडस्ट्रीज बोर्ड कॉम्प्लेक्स, पो.-सिल्पुखुरी, चांदमारी	781003	0361-4083136

खादी की विशिष्टता

- खादी हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रपिता की गौरवशाली विरासत है। खादी एवं ग्रामोद्योग भारत की दो राष्ट्रीय धरोहर हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में खादी और ग्रामोद्योग (केवीआई) का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि ये बहुत कम प्रति व्यक्ति निवेश से रोजगार पैदा करते हैं।
- खादी को 'भारत में सूती, ऊनी या रेशम के धागों से हथकरघे पर बुने गये और हाथ से काते गये किसी भी कपड़े, या दो या सभी धागों के संयोजन' के रूप में परिभाषित किया गया है।
- खादी क्षेत्र, मीट्रिक गिनती प्रणाली (एस ट्विस्ट यार्न) का पालन करके कताई और बुनाई (हाथ से काता या हाथ से बुना गया) में पारंपरिक तकनीक का उपयोग कर रहा है, जो मिलों/हथकरघा क्षेत्र से पूरी तरह से अलग है (क्योंकि वे अंग्रेजी गणना प्रणाली के साथ जेड ट्विस्ट यार्न का उपयोग कर रहे हैं।) इसके अलावा, खादी क्षेत्र के कताई और बुनाई दोनों के लिए अपने स्वयं के तकनीकी/गुणवत्ता मानदंड हैं, जो मिल/हथकरघा क्षेत्र से बिल्कुल अलग हैं।
- हाथ से काती गई या हाथ से बुनी गई प्रक्रिया से कपास, रेशम और ऊन जैसे प्राकृतिक रेशों से बनी खादी में अधिक कोमलता होती है, जो इसे गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म बनाती है।
- इसके अलावा, खादी को ज्यादातर प्राकृतिक रंगों जैसे इंडिगो, एलिजारिन, लाल रंग के जंग लोहा के साथ गुड़ के किण्वित पानी के साथ रंगा जाता है और अनार तथा हरड़ का उपयोग करके इसे पीला रंग दिया जाता है, जिससे यह त्वचा तथा पर्यावरण के अनुकूल, आरामदायक, सांस लेने योग्य और शून्य कार्बन उत्पाद बन जाता है। इसके अलावा खादी की एक निश्चित मात्रा जैविक कपास से भी बनती है। इन अद्वितीय विशेषताओं के साथ, खादी कपड़ा टिकाऊ है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर खादी का उत्पादन होता है, जो सबसे अमीर लोगों तक पहुंचता है।
- खादी ग्रामोद्योग आयोग – केवीआईसी, आंध्र पांड्योर फाइन खादी (100 प्रतिशत जैविक कपास के उपयोग और पुरानी पारंपरिक प्रक्रिया के उपयोग के साथ), 300 से 500 मलमल खादी, टस्सर सिल्क खादी, रेशम के कचरे आदि से बना स्पन सिल्क कपड़ा जैसी विरासत खादी किस्मों का उत्पादन करके बुनाई क्षेत्र में राष्ट्रीय पारंपरिक विरासत शिल्प को बरकरार रख रहा है। 300 से अधिक धागों से निर्मित मलमल खादी कपड़ा किसी भी उपकरण/मशीन का उपयोग कर उत्पादित नहीं किया जा सकता है। यह एक ऐसी विरासत प्रक्रिया है जो अब भी खादी ग्रामोद्योग आयोग के पास है। ❑

– **विनित कुमार**, मुख्य कार्यकारी अधिकारी (केवीआईसी)

भारत के हथकरघा उत्पाद

लोकल टू ग्लोबल

डॉ प्रलोक गुप्ता | एसोसिएट प्रोफेसर, सेवा एवं निवेश, डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली। ईमेलः praloc@iift.edu

पुष्पेंद्र राजपूत | संयुक्त सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार। ईमेलः pushpender.r@nic.in

'भारतीय हथकरघा' चिह्न (मार्क) का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि निर्यातक, समय पर उच्च गुणवत्ता वाले कपड़े खरीदें और भारत के प्रामाणिक तथा हाथ से बुने हुए उत्पादों के लिए एक अनूठी छवि कायम करें। यह लेख भारतीय हथकरघा उत्पादों के लिए मुख्य बाज़ारों, निर्यात रुझानों, निर्यात के लिए प्रमुख हथकरघा उत्पादों आदि के संदर्भ में प्रासंगिक डाटा का विश्लेषण करके एक अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

हथकरघा क्षेत्र, भारत में हाथ से बुने हुए उत्पादों के एक महत्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। हथकरघा उत्पाद भारत की संस्कृति और सभ्यता को प्रदर्शित करते हुए आदर्श कारीगरी का जीवंत प्रमाण हैं। जैसे पश्मीना (कश्मीर), फुलकारी (पंजाब), चिकनकारी (उत्तर प्रदेश), मूंगा सिल्क (असम), नागा शॉल (नगालैंड), पोचमपल्ली इकत (तेलंगाना), कांचीपुरम साड़ी (तमिलनाडु), मैसूर सिल्क (कर्नाटक), बांधनी (गुजरात), पैठणी (महाराष्ट्र) आदि। भारत में हथकरघा क्षेत्र कृषि के बाद 3 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करने वाले असंगठित क्षेत्र के रूप में दूसरे नंबर पर है। यह लगभग 24 लाख करघों (आईबीईएफ, 2024) के साथ देश का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग भी है।

तालिका 1: हथकरघा उत्पादों के एचएस कोड

एचएस अध्याय	उत्पाद प्रकार	एचएस कोड
50	सिल्क	5007 90 10
51	ऊन, महीन मोटे जानवरों के बाल, घोड़े के बाल का सूत और बुने हुए फैब्रिक	5112 90 50
52	कपास	5208 31 21; 5208 41 21; 5208 49 21; 5208 59 20; 5209 11 11; 5209 11 12; 5209 11 13; 5209 11 14; 5209 11 19; 5209 51 11
57	कालीन और अन्य टेक्सटाइल फ्लोर कवरिंग	5702 42 30; 5705 00 24; 5705 00 42
58	विशेष बुने हुए कपड़े, गुच्छेदार फ़ैब्रिक, लेस, टेपेस्ट्री, ट्रिमिंग, कढ़ाई	5802 10 60
62	परिधान की वस्तुएं और कपड़े के साथ की एक्सेसरीज़, बिना हुआ या क्रोशिया वाले	6214 10 30; 6216 00 20
63	अन्य निर्मित टेक्सटाइल वस्तुएं : सेट, फटे कपड़े और वॉर्न टेक्सटाइल आर्टिकल, टुकड़े	6302 21 10; 6302 51 10; 6302 60 10; 6302 91 10; 6304 19 40; 6304 92 11; 6304 92 21; 6304 92 31; 6304 92 41; 6304 92 81; 6304 92 91; 6304 99 91; 6304 99 92; 6307 10 30

स्रोत: लेखक ने हथकरघा निर्यात संवर्धन परिषद से संकलन किया है।

यद्यपि भारतीय हथकरघा उत्पाद छोटे शहरों और गाँवों में उत्पादित होते हैं, लेकिन उन्हें विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है। ये उत्पाद अपनी विशिष्टता, गुणवत्ता, विविधता और मजबूती के लिए दुनिया भर में मान्यता प्राप्त हैं। इन उत्पादों के निर्माता, भारत के बुनकर, अपने हाथ से कताई और बुनाई कौशल के लिए विश्व स्तर पर भी पहचाने जाते हैं। यह वैश्विक पहचान भारत के हाथ से बुने हुए विभिन्न उत्पादों के लिए बड़े निर्यात बाजार बनाने में मदद करती है।

यह लेख भारतीय हथकरघा उत्पादों के लिए मुख्य बाज़ारों, निर्यात रुझानों, निर्यात के लिए प्रमुख हथकरघा उत्पादों आदि के

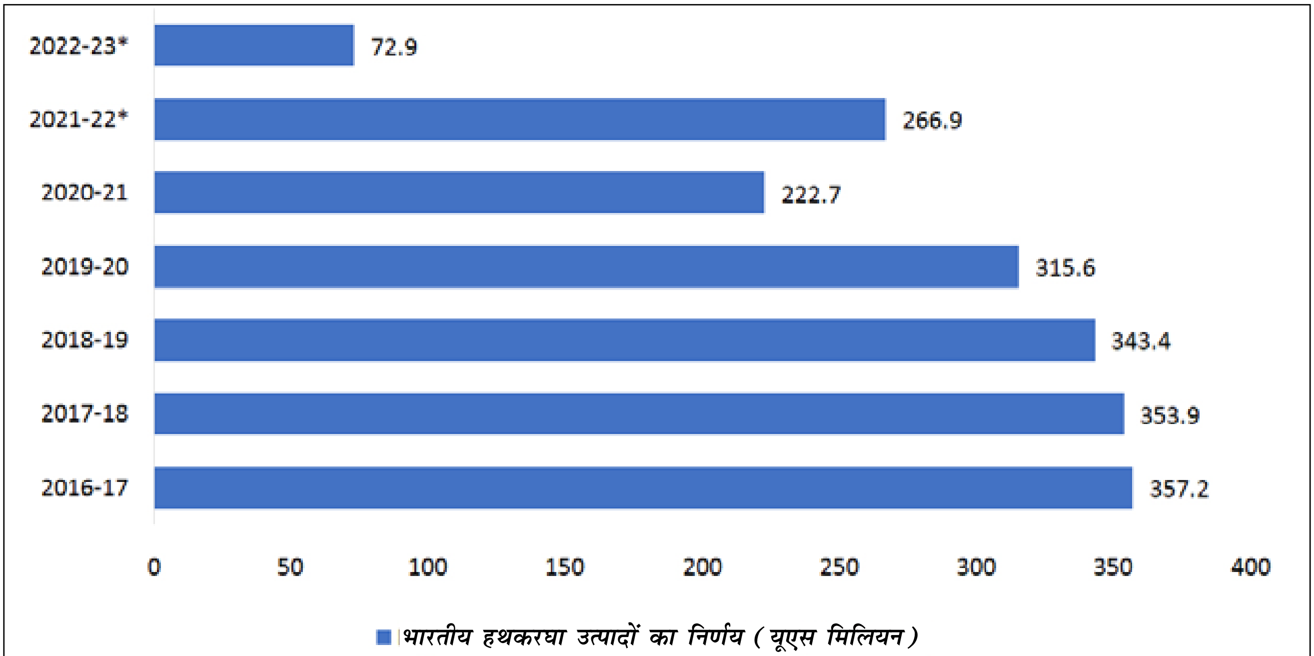

नोट: *अप्रैल 2021 से फरवरी 2022, *अप्रैल 2022 से जुलाई 2022

स्रोत: डाटा, हथकरघा निर्यात संवर्धन परिषद से लिया गया है।

चित्र 1: भारतीय हथकरघा उत्पादों का निर्यात (यूएस + मिलियन)

संदर्भ में प्रासंगिक डाटा का विश्लेषण करके एक अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह भारतीय हथकरघा उत्पादों के लिए वैश्विक अवसरों और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उनके सामने आने वाली चुनौतियों को भी रेखांकित करता है।

भारतीय हथकरघा का अंतरराष्ट्रीयकरण

हथकरघा उत्पादों को विश्व सीमा शुल्क संगठन द्वारा वर्गीकरण के हार्मोनाइज्ड सिस्टम (एचएस) के तहत विशिष्ट कोड दिए गए हैं। विभिन्न हथकरघा उत्पादों के लिए एचएस कोड तालिका 1 में दिए गए हैं।

भारतीय हथकरघा उत्पादों का निर्यात 2016-17 से 2019-20 (कोविड-19 पूर्व वर्ष) तक प्रत्येक वर्ष 300 मिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक था। वर्ष 2020-21 में कोविड-19 के तुरंत बाद निर्यात में 30 प्रतिशत की गिरावट आई। हालांकि 2021-22 में कुछ सुधार देखा जा सकता है, लेकिन वे अभी भी पूर्व-कोविड स्तर तक नहीं पहुंच पाए हैं। भारतीय हथकरघा उत्पादों के निर्यात रुझान (कोविड से पहले और बाद में) चित्र 1 में प्रस्तुत किए गए हैं।

भारतीय हथकरघा उत्पादों की विश्व के 20 से अधिक देशों, मुख्य रूप से विकसित देशों और मध्य पूर्व में काफी मांग है। इन देशों में, अमेरिका एक प्रमुख बाजार है और 2021-22 में अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारत के हथकरघा उत्पादों की निर्यात मांग के लगभग 40 प्रतिशत हिस्से की गणना की गई है। भारतीय हथकरघा उत्पादों के लिए शीर्ष दस निर्यात बाजार और 2018-19 से 2022-23 तक इन देशों में भारत के हथकरघा निर्यात को तालिका 2 में प्रस्तुत किया गया है।

भारत के हथकरघा निर्यात में प्रमुख वस्तुओं में चटाई और मैटिंग, कालीन, गलीचा, बेडशीट, कुशन कवर और अन्य हथकरघा वस्तुएं शामिल हैं। जबकि घरेलू सजावटी उत्पादों, जिनमें लिनन बेड, पर्दे, टेबल और किचन लिनन, कुशन कवर आदि शामिल हैं और यह भारतीय हथकरघा उत्पादों के निर्यात में 60 प्रतिशत से अधिक का योगदान करते हैं, मैट और मैटिंग ऐसे निर्यात का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा हैं। इनमें से अधिकांश उत्पाद चार प्रमुख शहरों, करूर, पानीपत, वाराणसी और कन्नूर से निर्यात किए जाते हैं। ये शहर निर्यात बाजारों के लिए लिनेन बेड, टेबल लिनेन, किचन लिनेन, टॉयलेट लिनेन, फर्श कवरिंग, कढ़ाई वाली कपड़े की वस्तुओं आदि का उत्पादन करते हैं (आईबीईएफ, 2024)।

हथकरघा उत्पादों की ब्रांडिंग: 'इंडिया हैंडलूम' ट्रेड मार्क

'हैंडलूम मार्क' के आने से ग्राहकों को यह आश्वासन मिला कि संबंधित हथकरघा उत्पाद प्रामाणिक है। चूंकि प्रामाणिकता के अलावा उत्पाद की गुणवत्ता भी ग्राहकों के लिए

तालिका 2: भारतीय हथकरघा उत्पादों के लिए शीर्ष 10 निर्यात बाजार (आंकड़े मिलियन अमरीकी डॉलर में)

देश	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23*
संयुक्त राज्य अमेरिका	94.2	100.5	83.1	105.3	58.1
संयुक्त अरब अमीरात	16.3	11.2	3.4	5.9	12.7
स्पेन	25.2	33.4	10.1	13.9	12.5
यूके	17.8	17.3	19.0	22.9	11.9
इटली	16.5	10.8	9.0	11.3	8.9
ऑस्ट्रेलिया	13.5	11.1	10.7	9.4	8.0
फ्रांस	13.9	12.1	9.7	11.8	7.2
जर्मनी	14.7	12.3	9.9	10.6	6.0
नीदरलैंड	12.1	8.3	5.4	5.4	5.6
ग्रीस	5.7	5.2	3.5	5.6	4.9

नोट: *वर्ष 2022-23 के डाटा केवल कुछ महीनों के लिए हैं, न कि पूरे वर्ष 2022-23 के लिए। ***स्रोत:*** *हथकरघा निर्यात संवर्धन परिषद डाटा*

एक महत्वपूर्ण पहलू है, 'इंडिया हैंडलूम' ने हथकरघा उत्पादों की एक ब्रांडिंग प्रदान की है जो 'शून्य दोष और पर्यावरण पर शून्य प्रभाव के साथ उच्च गुणवत्ता वाले हैं।' 'इंडियन हैंडलूम' मार्क का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि निर्यातक समय पर उच्च गुणवत्ता वाले कपड़े खरीदें और भारत के हाथ से बुने हुए प्रामाणिक उत्पादों के लिए एक अनूठी छवि कायम करें। इसका ट्रेड मार्क्स अधिनियम, 1999 के तहत एक ट्रेड मार्क (चित्र 2 में दिखाया गया लोगो) के रूप में भी पंजीकृत किया गया है।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय हथकरघा उत्पादों के लिए आईपीआर सुरक्षा

भारत में हथकरघा उत्पादकों के लिए बौद्धिक संपदा (आईपी) सुरक्षा, जिओग्राफिकल इंडिकेशन्स ऑफ गुड्स एक्ट, 1999 और द डिज़ाइन एक्ट, 2000 के माध्यम से प्रदान की जाती है। इन अधिनियमों का उद्देश्य न केवल भारत में बल्कि विदेशी बाजारों में निर्यात किए गए हथकरघा उत्पादों को आईपी सुरक्षा प्रदान करना भी है।

वस्तुओं के भौगोलिक संकेत (पंजीकरण एवं संरक्षण) अधिनियम, 1999

भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग उस उत्पाद को प्रदान किया जाता है जो अपने विशिष्ट मूल स्थान से पहचाना जाता है। जीआई टैग किसी उत्पाद की प्रामाणिकता और स्रोत तथा उससे जुड़े गुणों के बारे में बताता है। भारत में, कई हथकरघा उत्पादों को जीआई टैग प्रदान किया गया है, जिनमें 'पोचमपल्ली इकत', 'चंदेरी साड़ी', 'सोलापुर चादर', 'मैसूर सिल्क', 'कांचीपुरम सिल्क' आदि शामिल हैं। इन हथकरघा उत्पादों की जीआई स्थिति यह सुनिश्चित करती है कि उन्हें मशीनों द्वारा कॉपी और निर्मित नहीं किया गया है। यह इन उत्पादों के बुनकरों को कीमत के नुकसान से उबरने में मदद करता है क्योंकि मशीन से बने उत्पाद हाथ से बुने हुए उत्पादों की तुलना में सस्ते होते हैं।

भारतीय हथकरघा के लिए संभावित वैश्विक अवसर

मशीन-निर्मित उत्पादों के उत्पादन में महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति के बावजूद भारतीय हथकरघा उत्पादों में नए अवसर मौजूद हैं। वर्तमान समय में खरीददारों और विक्रेताओं का ज्यादातर ध्यान टिकाऊ उत्पादों पर है। नई पीढ़ी स्टाइल के प्रति जागरूक है लेकिन पर्यावरण-प्रेमी है और ऐसे उत्पादों को पसंद करती है जो स्टाइलिश हों लेकिन पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाएं। हथकरघा उत्पाद नई पीढ़ी की इन दोनों आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। हाथ से बुने उत्पाद अद्वितीय, स्टाइलिश, संस्कृति-उन्मुख और पर्यावरण-अनुकूल हैं। बढ़ते ई-कॉमर्स और

चित्र 2: 'इंडिया हैंडलूम' ट्रेडमार्क का लोगो और ट्रेडमार्क के अंतर्गत आने वाले उत्पाद

डिजिटल प्लेटफॉर्म की उपलब्धता हथकरघा उत्पादकों को छोटे शहरों और दूरदराज के स्थानों से भी अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचने का अवसर प्रदान करती है।

इन अवसरों के बावजूद, हथकरघा उत्पादों को हाथ से बुनाई की परंपरा को जीवित रखने की महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ता है। शिक्षा पर अधिक जोर देने और बेहतर वेतन वाली कुशल नौकरियों की उपलब्धता में वृद्धि के साथ, पारंपरिक कारीगर अपनी नई पीढ़ी को हाथ से बुनाई के पेशे में लाने के इच्छुक नहीं हैं, जो अधिक-श्रम वाला और ज्यादातर कम भुगतान वाला है। उत्पादकों को मशीन-निर्मित कपड़ों से भी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जो कम श्रम लगने के कारण अक्सर सस्ते होते हैं। प्रतिस्पर्धात्मक नुकसान और अधिक गंभीर हो जाता है क्योंकि मशीन से बने उत्पाद हाथ से बुने हुए उत्पादों की प्रतिकृतियों की तरह दिखते हैं और इसलिए मशीन से बने उत्पाद तथा हाथ से बुने हुए प्रामाणिक उत्पाद के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है।

निष्कर्ष

भारत के हथकरघा उत्पाद एक ही समय में परंपरा और आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन उत्पादों के अनूठे डिजाइन, गुणवत्ता और विविधता ने पिछले कुछ वर्षों में अन्य देशों में एक विशिष्ट बाजार बनाने में मदद की है। हाथ से बुने उत्पादों के कारीगरों ने नई पीढ़ियों की मांगों को पूरा करने के लिए अपने डिजाइन और कपड़ों के साथ प्रयोग किया है। परिणामस्वरूप, आज भारतीय हथकरघा उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय मॉडलों और मशहूर हस्तियों द्वारा समर्थन दिया जाता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत के हथकरघा उत्पाद अपनी स्थानीय विशेषताओं के साथ महत्वपूर्ण वैश्विक छाप छोड़ रहे हैं। ❑

अंतिम टिप्पणियां

1. एचएस वर्गीकरण विदेशी व्यापार में उत्पादों को वर्गीकृत करने के लिए संख्यात्मक कोड निर्दिष्ट करने की एक विधि है। सीमा शुल्क अधिकारी सीमा शुल्क लगाने और व्यापार डाटा एकत्र करने के उद्देश्य उत्पादों की पहचान करने के लिए एचएस कोड का उपयोग करते हैं।
2. https%//www.indiahandloombrand.gov.in/pages/background.
3. https://www.textilecoach.net/post/ipr-protection-to-handlooms-in-india-an-overview पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर।

संदर्भ

1. आईबीईएफ (2024), 'हथकरघा उद्योग और निर्यात, https://www.ibef.org/exports/handloom-industry-india
2. हथकरघा निर्यात संवर्धन परिषद (2024), https%//www.hepcindia.com/export_assistance
3. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय (2021), 'मार्केट-एक्सेसस-इनिसिएटिव-एमएआई-स्कीम-2021 19 जुलाई 2021
4. पीआईबी नोट (2023), 'विदेश व्यापार नीति 2023 की घोषणा,https%//pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx\PRID¾1912572
5. https://www.indiahandloombrand.gov.in/pages/background
6. https://www.textilecoach.net/post/ipr-protection-to-handlooms-in-india-an-overview
7. https://ruralhandmade.com/blog/market-dynamics-of-the-handloom-market-a-global
8. https://economictimes.indiatimes.com/industry/cons-products/garments-/-textiles/export-benefits-under-rodtep-extended-to-certain-textile-items/articleshow/99008352.cms?from=mdr
9. https://www.textilecoach.net/post/ipr-protection-to-handlooms-in-india-an-overview.

हमारी पत्रिकाएं

योजना
विकास को समर्पित मासिक
(हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू व 10 अन्य भारतीय भाषाओं में)

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

कुरुक्षेत्र
ग्रामीण विकास पर मासिक
(हिंदी और अंग्रेज़ी)

आजकल
साहित्य एवं संस्कृति का मासिक
(हिंदी तथा उर्दू)

बाल भारती
बच्चों की मासिक पत्रिका
(हिंदी)

घर पर हमारी पत्रिकाएं मंगाना है काफी आसान...

आपको सिर्फ नीचे दिए गए 'भारत कोष' के लिंक पर जा कर पत्रिका के लिए ऑनलाइन डिजिटल भुगतान करना है-
https://bharatkosh.gov.in/Product/Product

सदस्यता दरें

प्लान	योजना या कुरुक्षेत्र या आजकल		बाल भारती	
वर्ष	साधारण डाक	ट्रैकिंग सुविधा के साथ	साधारण डाक	ट्रैकिंग सुविधा के साथ
1	₹ 230	₹ 434	₹ 160	₹ 364

ऑनलाइन के अलावा आप डाक द्वारा डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर से भी प्लान के अनुसार निर्धारित राशि भेज सकते हैं। डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल ऑडर या मनीआर्डर '**अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय**" के पक्ष में **नई दिल्ली** में देय होना चाहिए।

अपने डीडी, पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर के साथ नीचे दिया गया 'सदस्यता कूपन" या उसकी फोटो कॉपी में सभी विवरण भरकर हमें भेजें। भेजने का पता है-
संपादक, पत्रिका एकांश, प्रकाशन विभाग, कक्ष सं. 779, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

अधिक जानकारी के लिए ईमेल करें- pdjucir@gmail.com

हमसे संपर्क करें- **फोन : 011-24367453** (सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रात: साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

कृपया नोट करें कि सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद सदस्यता शुरू होने में कम से कम आठ सप्ताह लगते हैं। कृपया इतने समय प्रतीक्षा करें और पत्रिका न मिलने की शिकायत इस अवधि के बाद करें।

सदस्यता कूपन (नई सदस्यता/नवीकरण/पते में परिवर्तन)

कृपया मुझे 1 वर्ष के प्लान के तहत .... पत्रिका .... भाषा में भेजें।

नाम (साफ व बड़े अक्षरों में) ....

पता : ....

.... ज़िला .... पिन ....

ईमेल .... मोबाइल नं. ....

डीडी/पीओ/एमओ सं. .... दिनांक .... सदस्यता सं. ....

भारतीय बुनाई का ताना-बाना और तकनीकी विकास

डॉ पीयूष गोयल | जैव प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली। ईमेलः goyal.dbt@nic.in

भारत की पारंपरिक वस्त्र शिल्पकला हमें इतिहास, कलात्मकता और संस्कृति की जीवंत कलाकृतियों और सदियों पुरानी प्रथाओं से पीढ़ी-दर-पीढ़ी जोड़ती है। सामुदायिक बंधनों को बढ़ावा देने वाले ये अटूट धागे बदलाव के साथ एक समृद्ध समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई देते हैं। वस्त्रों का उत्पादन जो शुरू में कारीगर तक ही सीमित था, समय के साथ-साथ बुनाई और पैटर्न में भी कई बदलाव आए। वस्त्रों पर डिजाइन अब ग्लैमर, भव्यता और पूर्णता का पर्याय बन चुके हैं।

प्राचीनकाल से ही भारतीय हैंडलूम कारीगरी के लिए विश्वविख्यात है। यहां के हर राज्य के हथकरघा उद्योग में काफी विविधता के साथ कपड़ों पर सुंदर इंद्रधनुष मौजूद हैं। इनमें एक तरफ तो हाथ से काते और बुने हुए कपड़े हैं, जिसकी देश की प्राचीन संस्कृति और परंपराओं से घनिष्टता है, तो दूसरी तरफ पूंजी परिष्कृत कपड़ा मिले हैं। भारत में कपड़ा उद्योग की मूलभूत ताकत कपास, जूट, रेशम, ऊन जैसे प्राकृतिक तन्तु (फाइबर) से लेकर पॉलिएस्टर, विस्कोस, नायलॉन, ऐक्रेलिक जैसे सिंथेटिक/मानव निर्मित फाइबर और फाइबर/यार्न की एक विस्तृत शृंखला मौजूद है, जो इसे अन्य उद्योगों की तुलना में बेहद अद्वितीय बनाता है। भारत में प्रमुख कपड़ा केंद्रों में दिल्ली एनसीआर, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, राजस्थान जैसे प्रमुख राज्यों में उत्पादन का मजबूत आधार शामिल है।

भारतीय वस्त्रों का पारम्परिक इतिहास

भारतीय कपड़ों का संदर्भ प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता, चट्टानों की कटाई की मूर्तियों, गुफा चित्रों, मंदिरों, स्मारकों से प्राप्त मूर्तियों में मानव कला के रूपों में मिलती हैं। ऋग्वेद में मुख्य रूप से वस्त्रों को अधिवस्त्र, कुरला और अण्डप्रतिधि के रूप में वर्णित किया गया है, जो बाह्य आवरण (घूंघट), एक सिर-आभूषण या सिर-पोशाक (पगड़ी) तथा महिला के कपड़े का हिस्सा है। वैदिक संस्कृति में महिलाओं की पोशाक

'साड़ी' शब्द संस्कृत के 'षाटी' से लिया गया है। प्राचीनकाल में शती, शबाली या साड़ी, हिंदी में साड़ी बन गई। कपड़े भारतीय सामाजिक और आर्थिक स्थिति से भी संबंधित थे, अभिजात्य वर्ग मस्जिनी वस्त्र और रेशम के कपड़े पहनते थे, जबकि आम वर्ग स्थानीय रूप से बने कपड़ों से बना वस्त्र इस्तेमाल करते थे।

बुनाई की भारतीय परम्पराएं

बुनाई वह विधि है, जिसमें ताना (लम्बाई की दिशा में) एवं बाना (चौड़ाई की दिशा में) परस्पर लम्बवत धागों को आपस में गूंथकर वस्त्र बनाए जाते हैं। ताना तथा बाना (वार्प तथा वेफ्ट) तकनीकी के अलावा निटिंग, लेस बनाना, फेल्टिंग, ब्रेडिंग या प्लेटिंग आदि विधियों से भी वस्त्र बनाए जाते हैं। वस्त्र प्रायः करघा (लूम) पर बुने जाते हैं। भारतीय हथकरघा उद्योग सबसे पुराने उत्कृष्ट शिल्प कौशल तथा सबसे बड़े कुटीर उद्योग में से एक है, जिसने आजादी की लड़ाई से काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मिस्र के बेबीलोनियन काल के भारतीय बुनकरों की उनकी हस्त कताई, बुनाई और छपाई तकनीकों के लिए विश्वस्तरीय पहचान थी। कताई का पहला उपकरण 'तकला' था, जिसमें अन्ततः एक चक्कर जोड़ा गया, जिससे 'चरखे' का आविष्कार हुआ। भारत में खादी उत्पादन और हथकरघा उद्योग स्वतंत्रता का पर्याय बन गया था। ब्रिटिश शासन के दौरान हथकरघा बुनकरों की मशीनी धागे पर निर्भरता बढ़ने के बावजूद हथकरघा उद्योग प्रथम विश्व युद्ध तक बचा रहा। 18वीं-19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के दौरान यह तेजी से यंत्रीकृत हो गया। बाद में आयातित मशीनों से बने कपड़ों की बाढ़ से तथा 1920 के दशक में पावरलूम (मशीनों से बुनाई) की शुरुआत ने पारंपरिक भारतीय हथकरघा कारीगरों के समक्ष अनुचित प्रतिस्पर्धा पैदा की, और पारंपरिक हैंडलूम का पतन होता गया।

पावरलूम उद्योग को बढ़ावे के उद्देश्य से भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय द्वारा पावरलूम विकास एवं निर्यात संवर्धन परिषद का 1995 में गठन किया गया। भारत में कुल कपड़ा उत्पादन का लगभग 58.4 प्रतिशत विकेंद्रीकृत पावरलूम से, 5 प्रतिशत कपड़ा संगठित क्षेत्र से, 20 प्रतिशत हथकरघा क्षेत्र से तथा 15 प्रतिशत बुनाई के माध्यम से उत्पादित किया जाता है। पावरलूम से कॉयर जियो-टेक्सटाइल, फ्लोर मैटिंग, गलीचे बनाने के अलावा रेडीमेड कपड़े (गारमेंट्स) और घरेलू कपड़ा निर्माण काफी हद तक इस पर निर्भर हैं। अधिकांशतः पावरलूम का (अप्रैल 2022 तक) लगभग 39 प्रतिशत महाराष्ट्र में इस्तेमाल होता है, इसके अलावा आंध्र प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु राज्य पावरलूम उत्पाद के उत्पादक हैं। खादी और अन्य ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) मंत्रालय के तहत खादी और ग्रामोद्योग आयोग का गठन किया है। एक दशक पहले एक बड़ा बाजार होने के बावजूद देश में खादी और ग्रामोद्योग कारोबार मात्र 25-30 हजार करोड़ रुपये का था। सरकारी प्रयासों से इसमें तीन गुना मुनाफे तथा बिक्री में 5 गुना वृद्धि से यह कारोबार अब एक लाख तीस हजार करोड़ रुपये से अधिक का हो गया है। भारत के सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्योग, बुनकरों, कारीगरों और किसानों के उत्पादों में दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियों की रुचि बढ़ी है, जो इसे विश्व के बाजारों में पहुंचाने के लिए आगे आ रही हैं। वर्तमान वस्त्रों में पत्तियां, छाल, फर के छिलके और फेल्टेड कपड़े भी शामिल हैं।

भारतीय स्वदेशी परिधान और हैंडलूम

कपड़ों की पारंपरिक शैली पुरुष या महिला भेद के साथ बदलती रहती है। प्राचीन भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट शैली एवं विभिन्न प्रकार की बुनाई तकनीकें थीं, जिसमें से कई आज भी जीवित हैं। भारत के कई ग्रामीण हिस्सों में पारंपरिक कपड़े आसान सुलभता और आराम के कारण आज भी पहने जाते हैं, जबकि शहरी इलाकों में तेजी से बदलाव हुआ है। कश्मीरी शॉल, इतिहास का अभिन्न अंग हैं। 'मुंडम नेरियाथुम' साड़ी प्राचीनतम भारतीय संस्कृति को दर्शाती हैं, जो दक्षिण-पश्चिमी भाग के केरल राज्य में महिलाओं की पारंपरिक वेशभूषा है। मलयालम में इसे 'तुणि' (कपड़ा) जबकि नेरियाथु ऊपरी परिधान मुंडू के रूप में बनाया जाता है। सुनहरे बॉर्डर वाली सफेद साड़ियां 'दावणि' के नाम से जानी जाती हैं। तमिलनाडु में साड़ी को 'पुडावेक' तो कर्नाटक में 'सीरे' कहा जाता है। कर्नाटक में महिलाएं 'कोडागु' शैली की साड़ी पहनती हैं। महिलाओं द्वारा इस्तेमाल पारंपरिक असमिया पोशाक को 'मेखला सदोर' तथा त्रिपुरा की त्रिपुरी महिलाओं की पारंपरिक पोशाक 'रिगनाई पचरा' को ऊपरी शरीर पर 'रिकुटु' के साथ पहना जाता है। 'घाघरा चोली' या 'लहंगा चोली' राजस्थान और गुजरात में महिलाओं का पारंपरिक परिधान है।

देश में स्वदेशी हैंडलूम के कपड़े और सामान खूब खरीदे और पहने जाते हैं। आधुनिकता की दौड़ में यह कला पिछड़ती दिखाई देती है। स्वदेशी उत्पादों की महत्ता को प्राथमिकता देने

और इस उद्योग को बढ़ाने के लिए आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल जैसे अभियानों से हथकरघा उद्योग और कुशल बुनकरों की मदद की जा रही है। सरकार के साथ निजी कम्पनियों और बड़े-बड़े डिजाइनरों को अपने साथ स्थानीय गाँव-देहातों और छोटे-छोटे कस्बों से कुशलमंद कारीगरों/बुनकरों को जोड़ कर उन्हें उनके उत्पाद निर्माण में प्रौद्योगिकी सहयोग और उत्पाद संवर्धन के लिए आगे आना होगा। आज़ादी की लड़ाई में 7 अगस्त, 1905 को स्वदेशी उद्योगों, विशेष रूप से हथकरघा बुनकरों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत हुई थी। भारत सरकार ने अगस्त, 2015 से प्रतिवर्ष 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाने की शुरूआत की है।

पर्यावरण के अनुकूल सतत (सस्टेनेबल) वस्त्र निर्माण

पृथ्वी पर मंडराते जलवायु परिवर्तन के कारण सतत फैशन बाजार में लगातार वृद्धि हो रही है। सतत वस्त्र आम शब्दों में लंबे समय तक चलने वाले उस कपड़े या उत्पाद से सम्बंधित है, जो पर्यावरण के अनुकूल होते हैं। इन उत्पादों में इस्तेमाल वस्तुओं को दोबारा इस्तेमाल (रिसाइकल) किया जा सकता है। पर्यावरण के लिए खतरा बनता फैशन उद्योग, तेज़ी से प्रगति कर रहे सतत कपड़े के विकल्प के रूप में हमारे सामने है। इस दौड में भारत अभी शुरुआती दौर में है। भारत में महिलाएं शुरूआत से ही सतत फैशन की दुनिया में काम करती आ रही हैं। महिलाओं द्वारा घर-घर में हाथ से बनाए गए पारंपरिक कपड़े और कपड़ों की बुनाई यहां हर घर में अपनाई जाती है। इनके द्वारा संचालित लघु कुटीर उद्योगों पर सतत फैशन का निर्माण करने वाली महिलाओं के इन पारंपरिक उत्पादों पर बड़ी-बड़ी कंपनियां अपना ब्रांड स्थापित कर रही हैं।

वस्त्रों में विभिन्न स्थितियों, वातावरण और खतरों का सामना करने की सेवा क्षमता और प्रदर्शन क्षमता होती है, जो सौंदर्यीकरण, स्थायित्व, आराम, सुरक्षा देखभाल, पर्यावरणीय प्रभाव और लागत सामग्री की संरचना में नियोजित अवधारणाओं के अनुरूप होते हैं। हथकरघा प्रौद्योगिकी से ऊर्जा प्रभाव और पर्यावरणीय हानि लगभग शून्य है, जिसमें खादी, कपास के लघु कुटीर उद्योग भी शामिल हैं। दर्द विशेषज्ञों ने भी पाया है, कि हाथ से बुनाई करने से मस्तिष्क रसायन बदलने से 'फील गुड' हार्मोन (यानी सेरोटोनिन और डोपामाइन) में वृद्धि होती है, और तनाव कम होता है। हाथ की बुनाई शारीरिक गतिविधि को मजबूत बनाती है, और उंगलियां लचीली रहती हैं, जिससे गठिया से पीड़ित लोगों के लिए यह विशेष रूप से सहायक हो सकती है। इसकी दैनिक आदत से गठिया का दर्द, स्मृति हानि और मनोभ्रंश के विकास (अल्जाइमर रोग) का जोखिम कम रहता है। अतः भारतीय सांस्कृतिक हथकरघा विरासत को बनाए रखना महिलाओं, पुरुषों के स्वास्थ्य के साथ देश के स्वास्थ्य के लिए भी उतना ही जरूरी है, जितना कि हथकरघा उद्योग को आधुनिक उन्नत प्रौद्योगिकी की।

भारतीय संस्कृति की कपड़ों पर कैलिडोस्कोपी (बहुरूपदर्शन)

ऐतिहासिक रूप से हथकरघा उद्योग भारत में कहीं-कहीं पर ज्यादा विकसित है। राजस्थान से टाई एंड डाई, ओडिशा के बंधेज की रंगाई तकनीक, वाराणसी के सिल्क के बेल-बूटेदार वस्त्र, मध्य प्रदेश की चंदेरी का मलमल और महेश्वरी, उत्तर प्रदेश के जैक्वार्ड और फर्रूखाबाद के बेमिसाल प्रिंट, मछलीपटनम के छींटदार कपड़े, हैदराबाद के हिमरूस, वडोदरा की पटोला साड़ी, पंजाब के खेस और फुलकारी, पूर्वोत्तर राज्यों में असम एवं मणिपुर के के बम्बू उत्पाद (प्रोडक्ट्स), फेनेक, टोंगम तथा बॉटल डिजायन आदि अपनी अद्वितीय समृद्ध विविधता, शिल्प कौशल एवं डिजाइन की जटिलता के कारण भारतीय बाजार के अलावा वैश्विक बाजार में अत्यधिक पसंद किए जाते हैं।

भारतीय वस्त्र परम्पराओं में धागों के ताने-बाने से बुनकरों ने बड़ी मेहनत और लगन से अपनी काश्तकारी द्वारा विश्व में भारत को पहचान दिलवाई है, जो शिल्पकला के इतिहास, सभ्यता, विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत जितनी ही पुरानी है। कपड़ों पर पीढ़ियों से चली आ रही यह शिल्पकला विभिन्न राज्यों की पहचान का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। जम्मू और कश्मीर की पालतू चांगथंगी बकरियों के कच्चे बिना काते ऊन से बुनी 'पश्मीना शॉल' (पश्म –फारसी में ऊन) मशहूर है। 1940 के दशक की शुरुआत में बुशहर से आए बुनकरों के साथ हिमाचल प्रदेश के स्वदेशी कुलिवी लोगों द्वारा बुनी गई जीवंत रंगों और जटिल ज्यामितीय पैटर्न से बनी सादी कुल्लू

शॉल और अधिक अलंकृत डिजाइनों से स्थानांतरित हो चुकी है। पंजाबी शब्द 'फुलकारी' का अर्थ 'फूल' और 'अकारी' अर्थात् उकेरना (आकार या दिशा देना) है, जो एक बच्ची के आगमन पर माँ और दादी द्वारा जीवन के सार का प्रतीकरूप पीढ़ियों तक पूर्वजों के संकेत के रूप में दुपट्टे पर ऊकेरी गई कढ़ाई परम्परा है। उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक ताने-बाने में गहराई से गुंथी हुई बनारसी सिल्क साड़ियाँ विलासिता और सुंदरता का प्रतीक हैं। मुगल काल में 14वीं शताब्दी के आसपास फ़ारसी बुनकरों द्वारा सोने और चांदी के धागों से जटिल ब्रोकेड तैयार करने में बनारसी हथकरघा उद्योग प्रसिद्ध था। बनारस में 17वीं शताब्दी के दौरान 1603 के अकाल के कारण गुजरात से रेशम बुनकरों के आगमन से रेशम पर ब्रोकेड की बुनाई में सुधार हुआ, जो 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान गुणवत्ता में अपने चरम पर पहुंच गई। ब्रोकेड कपड़े में तीन धागों को एक साथ बुना जाता है। आमतौर पर ब्रोकेड पैटर्न का उपयोग परिधानों की तुलना में सजावटी और घरेलू सामानों में अधिक होता है। कम्प्यूटरीकृत जैक्वार्ड करघे ने ब्रोकेड उत्पादन को अधिक कुशल और काफी सस्ता बना दिया है।

ऐतिहासिक रूप से वस्त्रों पर छपाई दो हजार ईसा पूर्व से हो रही है, जिसका आरम्भ भारत से ही हुआ है। राजस्थान की जीवंत संस्कृति का प्रतीक पारंपरिक 'बंधनी' बुनकरों द्वारा नाखूनों से कपड़े को कई छोटे-छोटे बंधनों में बांधकर आलंकारिक डिजाइन की एक रंगाई तकनीक है, अक्सर इसका उपयोग पगड़ी और साड़ियों में किया जाता है। इसकी जड़ें लगभग 4000 ईसा पूर्व सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़ी हैं। छठवीं शताब्दी की पेंटिंग्स में इस कला को गुफा परिसरों की दीवारों पर बुद्ध के जीवन को दर्शाते हुए देखा गया है। 12वीं शताब्दी में महाराष्ट्र के साल्वी जाति के रेशम बुनकरों ने साल्विस चालुक्य राजपूतों का पक्ष लेने के उद्देश्य से अपने प्रसिद्ध पटोला कपड़े के लिए गुजरात को गंतव्य के रूप में चुना और इस कला को जन्म दिया था, यहां की डबल इकत बुनाई विधि से शानदार और सावधानीपूर्वक के तैयार हुई पटोला सिल्क काफी प्रसिद्ध है। इसी तरह गुजरात/राजस्थान का शीशे का काम (मिरर वर्क) की उत्पत्ति 13वीं शताब्दी के फारस में हुई थी, जो मुगल काल के दौरान भारत में आई। इस कला को द्वेषपूर्ण शक्तियों, बुरी नज़र से बचने, दुर्भाग्य और नकारात्मक आत्माओं से दूर रहने के लिए बनाया जाता था, जो धीरे-धीरे हिंदू और जैन धर्मों में उतरते हुए दर्पणों से सजाए गए शीशतोरणों में सुरक्षात्मक दृष्टि से उपयोग होने लगे। बुनकरी की इस हस्तकला को राजस्थान, गुजरात और हरियाणा राज्यों से महत्वपूर्ण संरक्षण प्राप्त है।

बिहार में भागलपुर, भारत के 'रेशम शहर' के रूप में विख्यात है। यहां की रेशम को टसर रेशम भी कहते हैं, जिसका प्राथमिक प्रसंस्करण केंद्र नाथनगर है। टसर रेशम एंथेरिया पफिया रेशमकीटों, जो टर्मिनलिया प्रजाति के पेड़ों में अपना घर ढूंढते हैं, के कोकून से बनाई जाती है। भागलपुरी रेशम से साड़ियों के अलावा, शॉल, कुर्तियां और विभिन्न परिधान बनाए जाते हैं। रेशम से बुनी एक और शानदार कृति महाराष्ट्र की 'पैठणी' साड़ी बुनाई की कलात्मकता का प्रतीक है, जो कपास और रेशम के मिश्रण से बुनी जाती है। साधारण कपास पर रेशम की शानदार चमकदार उपस्थिति के ताने-बाने से निर्मित डिज़ाइन, जटिल मोर रूपांकनों और चमकीले रंग पैठणी साड़ियों की विशेषता हैं, जिसे श्रद्धा के कारण 'देव वस्त्र' या 'देवताओं के वस्त्र' की उपाधि मिली हुई है। 'कांजीवरम' नाम से मशहूर कांचीपुरम की रेशम साड़ियां तमिलनाडु राज्य की बुनकर कला का अद्‌भुत नमूना है, जो तीन शटल का उपयोग से तैयार की जाती हैं। यह साड़ियां तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में महिलाओं द्वारा बहुत शौक से पहनी जाती हैं। तेलंगाना, ओडिशा और गुजरात की इकत (इंडोनेशियाई भाषा का शाब्दिक अर्थ 'बांधना') है, बुनाई की एक जटिल और काव्यात्मक प्रक्रिया है, जो देश की अन्य इकत कला से भिन्न है। इस कला की सुंदरता ओडिशा के पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में बहुतायत से दिखती है, जो भगवान जगन्नाथ पंथ के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। इस्तेमाल किए गए रंग अतीत, वर्तमान, भविष्य और परमात्मा के विभिन्न पहलुओं के सार को दर्शाते हैं। 'पोचमपल्ली' रेशम साड़ियों की एक विशिष्ट विशेषता उनकी विस्तृत ज्यामितीय डिजाइन है, जो शिल्प कौशल की समृद्ध विरासत को दर्शाती है। आंध्र प्रदेश राज्य में उत्कृष्ट हाथ से सूती कपड़े पर चित्रित 'कलमकारी' पारम्परिक कलात्मकता और प्राकृतिक सुंदरता का एक सच्चा प्रमाण है, जिसे केवल प्राकृतिक रंगों द्वारा तेईस जटिल चरणों में सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है। इसमें कपड़े पर दो अलग-अलग शैलियों में 'मछलीपट्टनम' शैली (पेडाना कलमकारी) अपनी ज्वलंत, सब्जी-रंग वाली ब्लॉक-पेंटिंग तकनीक तथा दूसरी

'श्रीकालहस्ती' शैली, मुक्तहस्त चित्रण (कलाम या कलम) है, जिसमें सूक्ष्म हस्तकला के साथ रंगों को जटिल रूप से भरकर मंत्रमुग्ध कर देने वाले उत्पाद बनाए जाते हैं। यह शैली मंदिर कला में अपनी जड़ें तलाशती हुई परंपराओं में मंदिर के पर्दे, रथ के बैनर, रामायण, महाभारत और पुराण जैसे हिंदू महाकाव्यों के देवी-देवताओं और दृश्यों का ज्वलंत चित्रण करती है। तमिलनाडु के सिक्कलनयाकनपेट्टई जैसे गाँव ने इस कलात्मक विरासत को अपनी आजीविका के रूप में आगे बढ़ाया है। पश्चिम बंगाल की 'कांथा' कढ़ाई शैली ग्रामीण महिलाओं के कुशल हाथों में निहित एक सांस्कृतिक रत्न है, जो सिलाई और तैयार किए गए वस्त्र की एक अनूठी शैली को परिभाषित करती है। 'कांथा' शब्द की उत्पत्ति सहस्राब्दी पहले संस्कृत के 'कोंथा', से हुई थी, जिसका अर्थ 'चिथड़े' से है। बंगाली क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं की मितव्ययी प्रथाओं से इसके विकास का पता चलता है। 19वीं सदी की शुरुआत में यह कला लगभग लुप्त हो गई थी। 1940 के दशक में पुनरुद्धार द्वारा इस स्थायी परंपरा में नई जान फूंकी गई।

बुनाई के क्षेत्र में नई तकनीकियां

भारत की पारंपरिक वस्त्र शिल्पकला हमें इतिहास, कलात्मकता और संस्कृति की जीवंत कलाकृतियों और सदियों पुरानी प्रथाओं से पीढ़ी-दर-पीढ़ी जोड़ती है। सामुदायिक बंधनों को बढ़ावा देने वाले ये अटूट धागे बदलाव के साथ एक समृद्ध समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई देते हैं। वस्त्रों का उत्पादन जो शुरू में कारीगर तक ही सीमित था, समय के साथ-साथ बुनाई और पैटर्न में भी कई बदलाव आए। वस्त्रों पर डिजाइन अब ग्लैमर, भव्यता और पूर्णता का पर्याय बन चुके हैं। देश का हैंडलूम क्षेत्र एक परिवर्तनकारी यात्रा देख रहा है, जो पारंपरिक हथकरघा से लेकर आधुनिक युग में अत्याधुनिक तकनीक और नवाचार को अपनाने तक विकसित हो चुका है। 1990 के दशक से नैनोमटेरियल्स अनुसंधान एवं अन्य प्रौद्योगिकियों में प्रगति से कपड़ों को मजबूत, दाग और झुर्रियों रहित तथा बैक्टीरिया जैसे रोगजनकों के प्रति अधिक प्रतिरोधी बनाने के लिए फिनिशिंग एजेंटों तथा धातु नैनोकण आधारित स्थायी उपचार विकसित किया गया है। कम्प्यूटरीकृत बुनाई मशीनों, स्वचालित करघों और डिजिटल प्रिंटिंग विधियों के समावेश के साथ 3डी प्रिंटिंग जैसी तकनीक ने न केवल डिजाइन पहलुओं में क्रांति ला दी है, बल्कि जटिल से जटिल डिज़ाइन बनाने के द्वार खोल दिए हैं। 3डी प्रिंटर तकनीकी में विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) द्वारा कपड़ा निर्माण में एडिटिव लेयर मैन्युफैक्चरिंग (एएलएम) में एक सीएडी सहायता प्राप्त तकनीक से परत-दर-परत वस्तु का निर्माण होता है, जिसका ज्यादातर उपयोग औक्सेटिक (सामग्री या संरचनाओं में उच्च ऊर्जा अवशोषण और ना टूटने जैसे यांत्रिक गुण) वस्त्रों तथा मिश्रित सामग्रियों के निर्माण में किया जाता है। ❑

पढ़ने का आनन्द प्रकाशन विभाग की पुस्तकों के संग

कपड़ों की बुनाई

कपड़े को बुनने के लिए ताने और बाने के धागों को एक दूसरे से जिस तरह से जोड़ा जाता है, उसे बुनाई कहते हैं। कपड़े कई तरह की किस्मों और डिज़ाइनों के बनते हैं। बुनियादी तौर पर बुनाई की तीन किस्में सादा बुनाई, ट्विल और साटन हैं। अन्य सभी इन बुनियादी बुनाइयों या उनके संयोजनों से निकली हैं। सादा, ट्विल, साटन, हनीकॉम्ब (मधुकोश), हक्काबैक, क्रेप और अन्य बुनाई तकनीकें मखमल, वेलवेट, डबल (दोहरा) कपड़ा और ट्यूबलर निर्माण सहित विविध प्रकार के कपड़े का उत्पादन करती हैं।

विभिन्न बुनियादी बुनाई संरचनाएं

सादा बुनाई

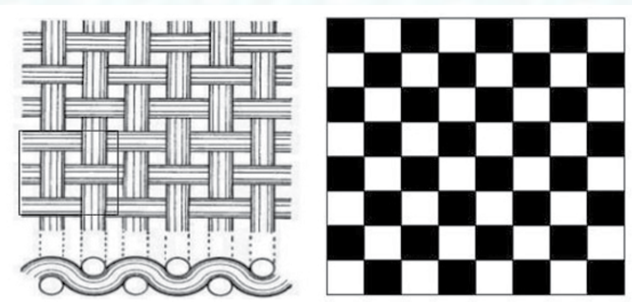

सादा बुनाई कपड़ा बुनाई का सबसे सरल और सबसे बुनियादी प्रकार है, जिसमें ताने और बाने के धागे वैकल्पिक तरीके से एक-दूसरे से जुड़ते हैं, जैसा कि नीचे दिखाया गया है, जिससे अधिकतम संख्या में आपस में जुड़ाव होता है। यह मजबूत जुड़ाव संरचना को दृढ़ता और स्थिरता प्रदान करता है। इसकी मूल इकाई को बुनने के लिए कम से कम दो सिरों और दो बानों की आवश्यकता होती है। इस बुनाई के लिए कम से कम दो हेडल फ्रेम की आवश्यकता होती है। इसका उपयोग कैम्ब्रिक, मलमल, कंबल, कैनवास, साड़ी, शर्टिंग, सूटिंग आदि में किया जाता है।

ट्विल बुनाई

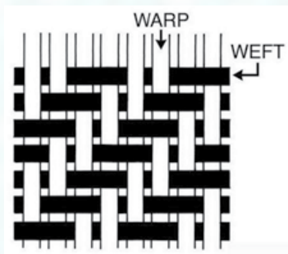

ट्विल बुनाई की विशेषता इसकी सतह पर विकर्ण रेखाएं हैं। यह सादा बुनाई और साटन बुनाई के साथ दूसरी सबसे बुनियादी बुनाई है। यह बुनाई कपड़े की सतह पर अधिक

संरचनात्मक डिज़ाइन बनाती है। इस बुनाई का उपयोग सजावटी उद्देश्यों के लिए किया जाता है। कम इंटरलेसमेंट के कारण ट्विल में धागों की सेटिंग करीब होती है, जो सादे बुनाई की तुलना में अधिक वजन और बेहतर आवरण प्रदान करती है। साधारण ट्विल में, इंटरलेसिंग पैटर्न की बाहरी और ऊपर की ओर गति हमेशा ऐसी होती है जो इस डिज़ाइन को एक विकर्ण रेखा प्रदान करती है। ट्विल बुनाई में दर्जनों विविधताएं पाई जा सकती हैं, जबकि दाहिने हाथ की ट्विल और बाएं हाथ की ट्विल सबसे आम हैं। दाहिने हाथ की ट्विल बुनाई में विकर्ण रेखाएं दाईं ओर से बाईं ओर जा रही हैं और बाएं हाथ की ट्विल में इसके विपरीत जाती हैं। तकनीकी रूप से ट्विल कपड़ों का आगे और पीछे का हिस्सा अलग-अलग होता है। ट्विल बुनाई का व्यापक रूप से उपयोग ड्रिल कपड़ा, खाकी वर्दी, डेनिम कपड़ा, कंबल, शर्टिंग, परदे, मुलायम फर्नीचर कवर आदि जैसे साज-सज्जा वाले कपड़े बनाने में किया जाता है।

सैटिन और साटिन

सैटिन/साटिन एक बुनियादी बुनाई है जिसमें ट्विल जैसा कोई नियमित पैटर्न नहीं होता है। कपड़े की सतह ताने-बाने जैसी होती है। इसमें आम तौर पर चमकदार

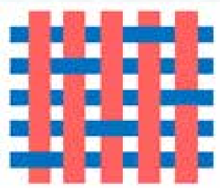

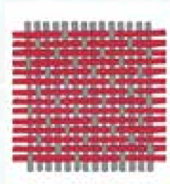

सतह होती है, जिसका मतलब है कि सूत की अन्यश्रृंखला के साथ एक पिरोए गए इंटरलेसमेंट को छोड़कर कपड़े की पूरी सतह पर ताना-धागा दिखाई देगा। ताना मुखी साटन में अधिक बाने के ऊपर, कपड़े की सतह पर तैरते हैं और बाना मुखी साटन में अधिक बाना सूत ताना धागों के ऊपर, कपड़े की सतह पर तैरते हैं। यदि यह बाने-चेहरे वाला है, तो इसे सैटिन के रूप में जाना जाएगा, जिसका अर्थ है कि कपड़े की सतह पर ज्यादातर बाने के धागे दिखाई देंगे। इन बुनाई में बुनियादी बुनाई के बीच सबसे कम इंटरलेसमेंट पॉइंट होते हैं। इसके कारण, यह कपड़े की सतह को अधिक चमक और चिकनाई देता है। इस बुनाई के साथ, सूती ताने और रेशम की भराई का उपयोग करना संभव है, जिसमें कपड़े की सतह पर अधिकांश रेशम की उपस्थिति होती है। इसका उपयोग साड़ी, ब्लाउज, ड्रेस मेटीरियल, चादरें, फर्निशिंग, पर्दे आदि बनाने में किया जाता है।

हनीकॉम्ब (मधुकोश) बुनाई

इस बुनाई को यह नाम इसकी बुनावट मधुमक्खी के जाल जैसी संरचना होने के कारण दिया गया है। इसमें ताने और बाने के धागे आपस में जुड़े हुए रहते हैं और इस तरह से

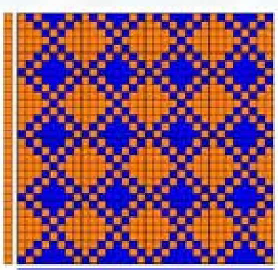

तैरते हैं कि एक नियमित पैटर्न से लकीरें और खोखली संरचनाएं बन जाती हैं, जो अंततः एक कोशिका जैसा रूप देती हैं। इस बुनाई में, ताना और बाना दोनों धागे दोनों तरफ स्वतंत्र रूप से घूमते हैं, जो किसी न किसी संरचना के साथ जुड़ा होता है। इस बुनाई से बना कपड़ा पूरे कपड़े पर लंबे समय तक तैरता रहता है। इस कारण से, यह नमी का अवशोषक होता है। इस विशेषता के कारण यह बुनाई तौलिये, चादरें और रजाई के लिए उपयोगी होती है। आमतौर पर, ये बुनाई दोहराव पर बनाई जाती है, जो सिरों और पिक्स में चार के गुणक में होते हैं।

हुक ए बैक बुनाई

इस बुनाई का उपयोग बड़े पैमाने पर सूती तौलिये और लिनन के कपड़े के लिए किया जाता है। यह दो चतुर्भुजों में लंबे समय तक तैरता है, जो इसे अधिक नमी-अवशोषक बनाता है।

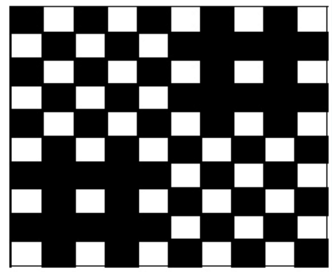

यह बुनाई संतुलित बुनाई की लंबी फ्लोट्स का संयोजन है। इसमें सम्पूर्ण निर्माण को चार बराबर भागों में बांटा गया है। आप यह भी कह सकते हैं कि इस बुनाई के चार चतुर्थांश हैं। दो चतुर्थांशों में सादा बुनाई है और अन्य दो चतुर्थांशों में व्यवस्थित रूप से लंबे सूत के फ्लोट्स की व्यवस्था की गई है। सादा बुनाई संरचना को दृढ़ता प्रदान करती है और लंबे धागे तैरते हुए नमी अवशोषण को बढ़ाने में मदद करते हैं। कभी-कभी, लंबी फ्लोट संतुलित बुनाई का उपयोग हुक ए बैक बुनाई में सादे बुनाई के साथ संयोजन में किया जाता है, जिसे हनीकॉम्ब हुक ए बैक बुनाई भी कहा जाता है।

क्रेप बुनाई

क्रेप बुनाई से तात्पर्य उस बुनाई से है जिसका कोई विशिष्ट पैटर्न नहीं होता है। बुनाई में थोड़ा-सा ट्विल का आभास हो सकता है, लेकिन उसमें प्रमुखता नहीं है। वे कपड़े की पूरी सतह पर बीज जैसे दिखने वाले

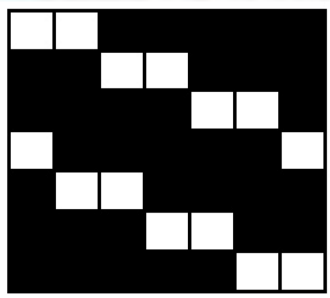

छोटे पैटर्न या छोटे धब्बे बनाते हैं। बुनाई का उपयोग अलग से या अन्य बुनाई के साथ संयोजन में किया जा सकता है। क्रेप बुनाई का उपयोग अक्सर बेलबूटे दार कपड़ों को बनाने में किया जाता है। सरल शब्दों में, क्रेप बुनाई का उपयोग खुरदरा रूप देने के लिए किया जाता है। यदि हम क्रेप धागों से क्रेप बुनाई बनाते हैं, तो यह संयोजन उल्लेखनीय रूप से खुरदरा या सिकुड़ा हुआ दिखाई देगा।

बेडफोर्ड कॉर्ड बुनाई

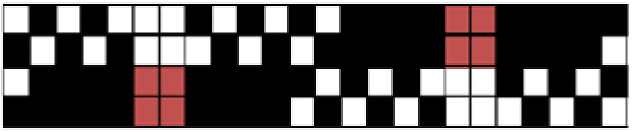

यह बुनाई का एक विशेष वर्ग है जो कपड़े में अधोमुखी ताना रेखाएं बनाता है जिनके बीच में महीन धंसी हुई रेखाएं होती हैं। इस कपड़े का उपयोग सजावटी या विशेष उद्देश्यों के लिए में किया जाता है। इस बुनाई को बनाने की विधि सरल है। बुनाई की पुनरावृत्ति की गणना कार्ड के सिरों को दो से गुणा करके की जाती है। इस बुनाई के लिए चार पिक रिपीट है। इसे बनाने के लिए बुनाई दोहराव (ताना सिरे) को दो हिस्सों में बांटा गया है। दोनों हिस्सों के पहले और आखिरी सिरे को कटिंग सिरे के रूप में माना जाता है। इन कटिंग सिरों पर सादा बुनाई डाली जाती है। ये सादे सिरे बेडफोर्ड कॉर्ड में धंसे हुए सिरे की तरह होते हैं।

वेल्ट्स और पिक

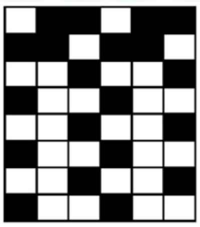

पिक बुनाई का कपड़ा दिखने में सादा होता है, जो सिलाई धागों की एक श्रृंखला के साथ-साथ ताने और बाने के धागों की एकश्रृंखला से बना होता है। यह बुनाई क्षैतिज रेखाओं (बाने के अनुसार) के निर्माण के कारण अनोखी दिखती है। इस बुनाई के लिए दो बीम की आवश्यकता होती है, एक सादे बुनाई के धागों के लिए और दूसरा सिलाई के सिरों के लिए। 'वेल्ट' शब्द ऐसे निर्माण को संदर्भित करता है, जो दांतेदार कपड़े में गहरी या खोखली (धंसी हुई) रेखाएं बनती दिखती हैं।

मॉक लेनो बुनाई

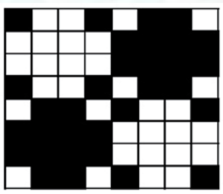

मॉक लीनो बुनाई का निर्माण अधिकतर सादे, ट्विल और साटन के संयोजन से किया जाता है। बुनाई का निर्माण चार चतुर्थांशों में किया गया है। पहले और तीसरे चतुर्थांश में संतुलित बुनाई होती है, और दूसरे और चौथे चतुर्थांश में इसके विपरीत बुनाई होती है। जालीदार कपड़े इस प्रकार दो शैलियों में बुनी जाती है। ताना-बाना विकृत मॉक लीनो बुनाई, इसलिए, ये बुनाई एक दूसरे के विपरीत बुनते हुए निर्मित होती है।

लेनो बुनाई

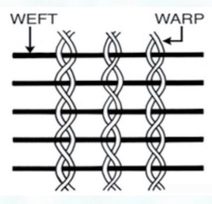

इसे गॉज या क्रॉस बुनाई के रूप में भी जाना जाता है, लेनो बुनाई में एक मजबूत लेकिन पारदर्शी कपड़ा प्रदान करने के लिए बाने के धागों के चारों ओर दो ताने के धागे बुने जाते हैं। एक बुनाई है जिसमें दो ताना धागे मुड़ते हैं और बाने के धागे के चारों ओर कसकर पकड़ते हैं। यह अधिक खुली बुनाई बनाता है जिसे शर्टिंग के लिए कसकर बुना जा सकता है या जाल या जाल जैसा दिखने के लिए पूरी तरह से ढीला छोड़ा जा सकता है।

बैकेड (समर्थित) कपड़ा

यह बुनाई 2 या अधिक अलग-अलग बुनाई को जोड़ती है, लेकिन एक तरफ की बुनाई दूसरी तरफ दिखाई नहीं देती है। उदाहरण के लिए सामने की तरफ साटन और पीछे की तरफ ट्विल को उपयुक्त टांके के साथ बुना जाता है। इस बुनाई का उपयोग करके, कपड़े के सामने और पीछे की तरफ 2 अलग-अलग प्रकार के धागे बुने जा सकते हैं। उदाहरण के लिए सामने की तरफ लिनन और पीछे की तरफ सूती कपड़ा बुना जा सकता है। यह कॉम्बिनेशन पहनने वाले को खूबसूरत लुक के साथ-साथ अच्छा आराम भी देगा।

टेरी पाइल

यह बुनाई प्रकृति में अनोखी है क्योंकि यह कपड़ों पर लूप पाइल्स बनाती है। इन बुनाई का उपयोग तौलिये के कपड़ों में किया जाता है। अधिक लोकप्रिय रूप से, इन तौलियों को टर्की तौलिये या टेरी तौलिये के रूप में जाना जाता है। ये तौलिये पानी सोखने की क्षमता के कारण अधिक लोकप्रिय हैं।

मखमल और कृत्रिम मखमल

ये कट-पाइल कपड़े हैं जो समृद्ध साज-सज्जा और सिले सिलाये कपड़ों के लिए अधिक लोकप्रिय रूप से उपयोग किए जाते हैं। इनका उपयोग आभूषण बक्से, असबाब के कवर आदि के लिए भी किया जाता है।

दोहरा कपड़ा (डबल बुनाई)

डबल कपड़ा ऐसी बुनाई है, जिनमें ताने और बाने के धागों की कम से कम दोश्रृंखलाएं होती हैं, जिनमें से प्रत्येक मुख्य रूप से कपड़े की अपनी परत बनाने में लगा होता है, इस प्रकार सामने से दिखने वाला कपड़ा पिछली तरफ से अलग कपड़ा लगता है। इस तरह के कपड़े के निर्माण का उद्देश्य सामने से सुन्दर दिखने के साथ साथ गर्मी के प्रभाव को रोकना है। डबल कपड़ों का उपयोग विभिन्न प्रकार के सजावटी कपड़ों जैसे सोफा कवर, फर्निशिंग, पर्दे के कपड़े, चादरें, बेड कवर, तकिया कवर और अन्य घरेलू वस्त्र के रूप में किया जाता है। इसका उपयोग सर्दियों के वस्त्र, रजाई, बेल्ट, विभिन्न प्रकार के औद्योगिक कपड़े आदि के उत्पादन के लिए भी किया जाता है।

ट्यूबलर कपड़ा

यह सामने और पिछली तरफ से बिना सिलाई के बुना हुआ दोहरा कपड़ा है। जब हम करघे से कपड़ा निकालेंगे तो कपड़े से बनी एक ट्यूब होती है। यह गोलाकार सीमलेस रूप में बुना हुआ कपड़ा होता है। ❑

स्रोत: माई गॉव

मधुबनी पेंटिंग

लेखकः मुल्क राज आनंद

मूल्यः 315 रुपये, भाषाः अंग्रेजी

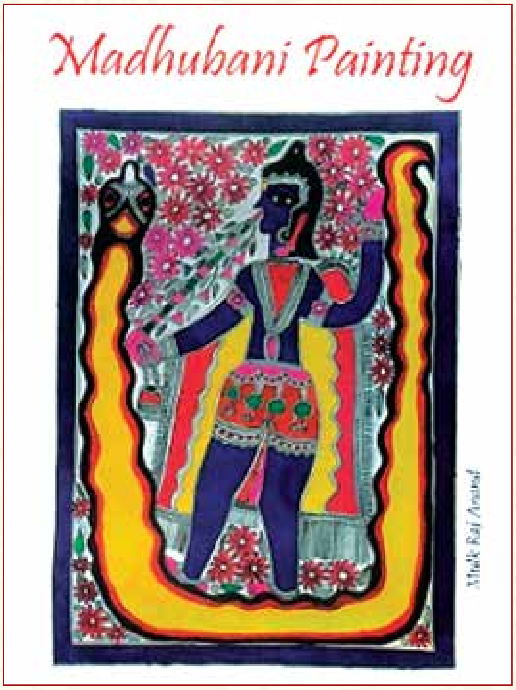

मधुबनी पेंटिंग की कला उद्देश्यपूर्ण पौराणिक गाथा है। पश्चिमी देशों के 'महत्वपूर्ण स्वरूप' की नजर में यह कला भर ही नहीं है। ये पेंटिंग ऐसे आख्यान हैं, जिनसे लोग अपने दैनिक अनुष्ठानों में प्रार्थना करते हैं। मधुबनी की लोक कला के स्रोत मौन के धुंधले क्षेत्रों में स्थित हैं, जो सृजन के उत्कर्ष क्षणों का एक अनुमान है। ब्रश की गतिविधियों के रहस्यमय परिवर्तन के माध्यम से, कलाकार शरीर को आत्माओं में बदल देता हैः फूल और पक्षी उन चित्रों को जीवंत कर देते हैं जो गहराई तक पहुंचने का साहस करते हैं।

हरे तालाब के पार आम और केले के पेड़ों से घिरे अपने घरों के गोबर से लिपे फर्श पर बैठकर महिलाएं रोजाना तस्वीरें बनाती हैं। वे पीढ़ियों से रंग-रोगन की इस कला को अपनाने लगी हैं।

लेखक, मुल्क राज आनंद, अंग्रेजी में उपन्यासों, लघु कथाओं और आलोचनात्मक निबंधों के एक प्रतिष्ठित लेखक और एक कला और साहित्यिक आलोचक थे। उन्होंने दक्षिण एशियाई संस्कृति के पहलुओं पर विविध पुस्तकें लिखीं और विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढ़ाया। उन्हें 1953 में अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार, 1968 में पद्म भूषण और 1971 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ❑

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, भूमि और लोग, कला और संस्कृति, वनस्पति और जीव, गांधीवादी साहित्य, जीवनियां और भाषण, विज्ञान और बाल साहित्य सहित राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर प्रकाश डालने वाले प्रकाशनों की एक विस्तृतशृंखला देखने और खरीदने के लिए www.publicationsvision.nic.in पर देखें।

भारतीय वेशभूषा

लेखक : अरविंद विश्वास

मूल्य : 120 रुपये, भाषा : हिन्दी

भारत को अपनी विविधता और संस्कृति पर गर्व है। भारतीय राज्यों की पारंपरिक पोशाकों में भी विविधता झलकती है, वेशभूषा समय और लोगों का दर्पण है। व्यक्तियों की पोशाक उनकी मन:स्थिति और रुचि, उनके सौंदर्यपरक स्वभाव रहन-सहन, कला-कौशल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

इस पुस्तक में हमारे लोग अतीत में कैसी पोशाक पहनते थे और आज देश के विभिन्न अंचलों में लोग कैसा पहनावा अपना रहे हैं, ऐसे पहनावे की दुनिया की झांकी देने की कोशिश की गई है। केश-प्रसाधन की शैलियों और आभूषणों, सौंदर्य-प्रसाधनों तथा वस्त्रों के उपयोग का भी संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

यह पुस्तक पुराने की नकल करने के साथ-साथ नई आवश्यकताओं, रुचियों और परिस्थितियों से तालमेल बिठाती है। इसके अतिरिक्त विविधता से भरपूर हमारे देश में समय-समय पर वेशभूषा में हुए परिवर्तनों के बारे में यह पुस्तक विस्तृत जानकारी देती है। ❑

समीक्षक : ममता रानी

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, भूमि और लोग, कला और संस्कृति, वनस्पति और जीव, गांधीवादी साहित्य, जीवनियां और भाषण, विज्ञान और बाल साहित्य सहित राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर प्रकाश डालने वाले प्रकाशनों की एक विस्तृतश्रृंखला देखने और खरीदने के लिए www.publicationsvision.nic.in पर देखें।

आजीविका के रूप में बुनकर व्यवसाय

मालविका हलवासिया | संयुक्त सचिव, दिल्ली शिल्प परिषद। ईमेलः malvika.saraogi@googlemail.com

भारत में हथकरघा के माध्यम से बुनाई का एक समृद्ध इतिहास और परंपरा है। इसमें प्रत्येक क्षेत्र में विशेष डिजाइन होते हैं और विभिन्न प्रकार के कच्चे माल का उपयोग किया जाता है। कुछ अनुमानों के अनुसार, हथकरघा उद्योग भारत में कृषि के बाद रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत हो सकता है।

दुर्भाग्य से, इस क्षेत्र के संबंध में विश्वसनीय डाटा की कमी होना इस क्षेत्र की अनेक चुनौतियों में से एक है।

इस क्षेत्र के सामने दूसरी बड़ी चुनौती पावरलूम द्वारा बनाए गए उत्पादों से प्रतिस्पर्धा है, जो बहुत सस्ते हैं और बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं। मशीन-निर्मित वस्तुओं के प्रचलन के परिणामस्वरूप कई बुनकर पारंपरिक हाथ से बुनाई की तकनीक से दूर हो रहे हैं।

बुनकरों के लिए एक और चुनौती तेजी से बदलता फैशन और डिजाइन प्राथमिकताएं हैं। अधिकांश बुनकर गाँवों और ग्रामीण इलाकों में घर पर काम करते हैं। करघा बुनकर के घर के केंद्र में होता है। कुछ बुनकरों के पास उत्पादों के डिजाइन और विपणन में औपचारिक प्रशिक्षण होता है, खासकर उन उत्पादों की जिनकी शहरी केंद्रों में मांग होती है।

इस प्रकार कई बुनकर, बेहतर जीवन की आशा में, अपने कौशल को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने के बजाय, अपने बच्चों को कार्यालयों में काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हालांकि, यह भी देखा जा सकता है कि पहले के समय के विपरीत, महिलाएं भी इस व्यापार में शामिल हो रही हैं।

समुचित डिजाइन और संरचनात्मक समर्थन के साथ, महिलाएं देश के कई प्रमुख संगठनों में बुनाई में भाग लेने के लिए आगे आई हैं।

हालांकि, हस्तनिर्मित और टिकाऊ उत्पादों में मौजूदा रुचि के साथ, बुनकरों के लिए नई आशा जगी है। हाथ से बुनाई करने से कोई कार्बन उत्सर्जन नहीं होता है। साथ ही, इसमें प्राकृतिक कच्चे माल का उपयोग होता है। यह हमारे अर्थ में टिकाऊ है। आज, कई भारतीय फैशन डिजाइनर ग्रामीण बुनाई से जुड़े समूहों के साथ काम कर रहे हैं। फैशन हाउस भी भारतीय हस्तशिल्प और हथकरघा संबंधी कार्यप्रणालियों में रुचि दिखा रहे हैं। शहरी ग्राहक भी हस्तनिर्मित उत्पादों के महत्व और सुंदरता को समझ रहे हैं और उनके लिए लाभदायक भुगतान करने के लिए तैयार हैं।

एक अन्य सकारात्मक बदलाव से बुनकरों के पास पूरे नए बाजारों, सूचना और कनेक्टिविटी तक आसान पहुंच है। उनके पास अपने उत्पादों के ऑनलाइन विपणन करने का विकल्प उपलब्ध हो रहा है। कुछ संगठन और कॉर्पोरेट घराने बुनकरों को कच्चा माल उपलब्ध कराने से लेकर उनके उत्पादों के विपणन तक पूरी मूल्यश्रृंखला में समर्थन दे रहे हैं।

बहुत-से अन्य देश हाथ के काम विशेषकर हथकरघा की इतनी समृद्ध संस्कृति का दावा नहीं कर सकते। आज भी ऐसे कौशल और ज्ञान वाले बुनकरों का होना एक दुर्लभ विशेषाधिकार है और हममें से प्रत्येक को हथकरघा को समझने, समर्थन करने और प्रोत्साहित करने के लिए अपना योगदान देना चाहिए। ❑

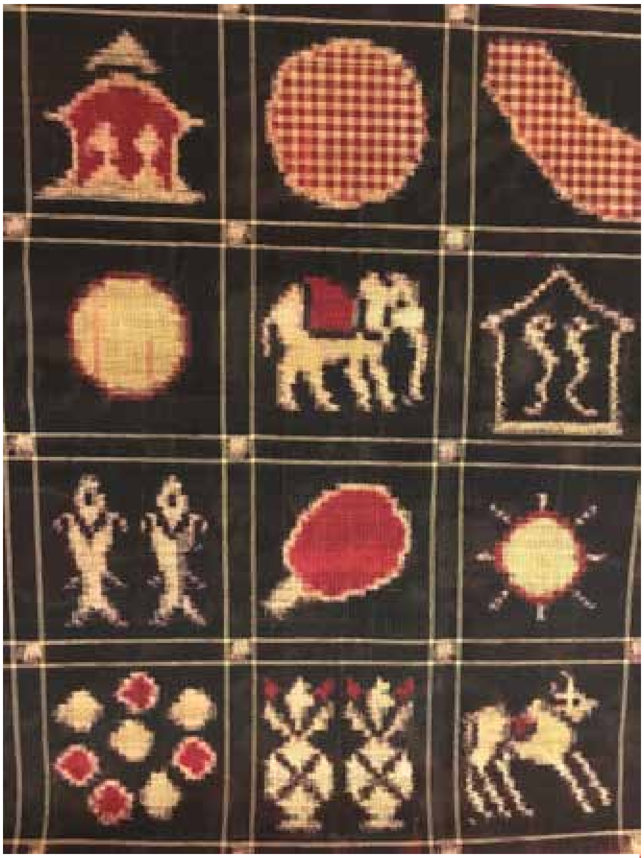

हमारे प्रकाशन

गांधी साहित्य, भारतीय इतिहास, जाने-माने व्यक्तियों की जीवनियां, उनके भाषण और लेखन, आधुनिक भारत के निर्माता शृंखला की पुस्तकें, कला एवं संस्कृति, बाल साहित्य

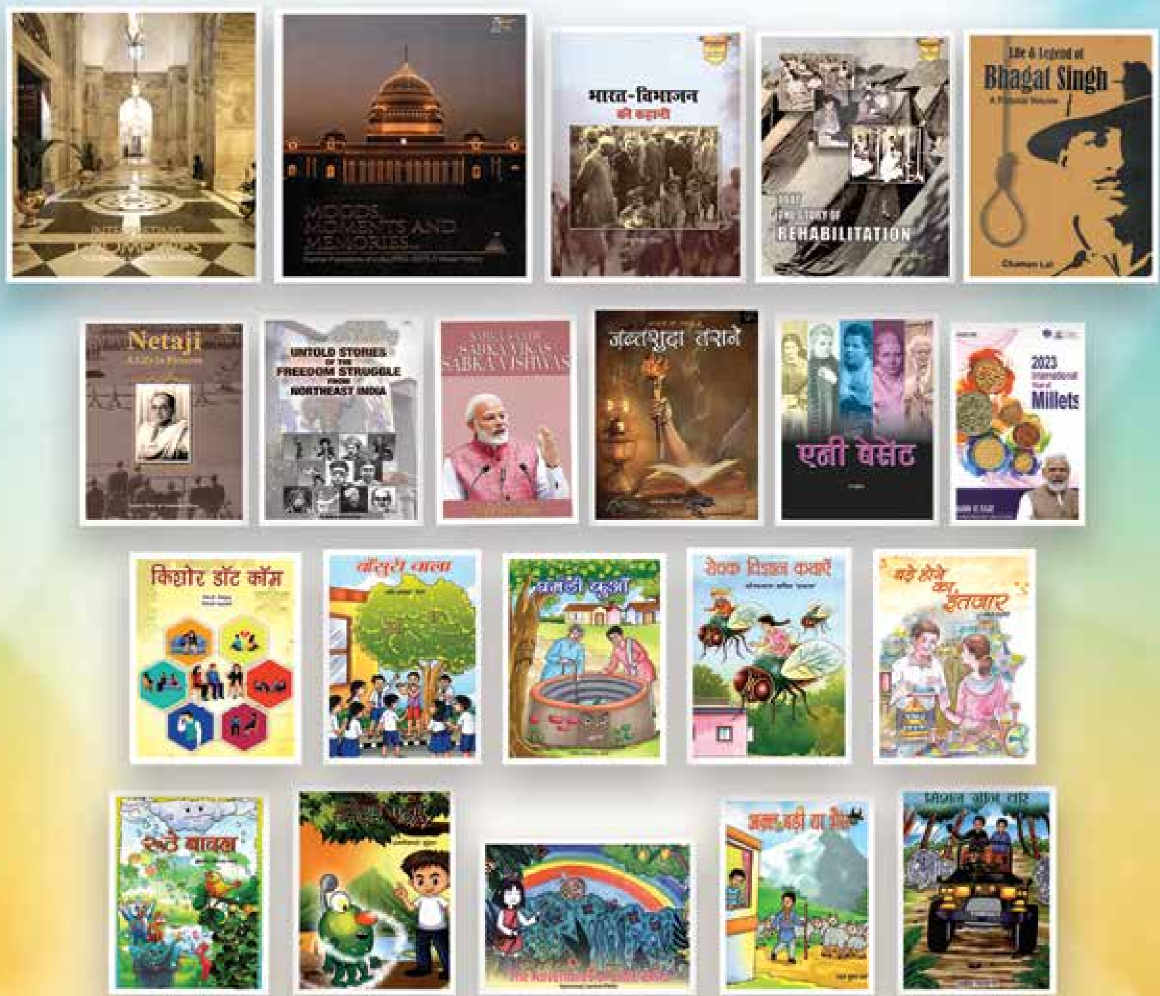

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

संकलन ऑनलाइन खरीदने के लिए कृपया **www.bharatkosh.gov.in** पर जाएं।

ऑर्डर के लिए कृपया संपर्क करें : फोन : 011-24365609, ईमेल : businesswng@gmail.com

वेबसाइट : **www.publicationsdivision.nic.in**

/dpd_india @DPD_India /publicationsdivision

RACE IAS

GS Foundation Course

इण्टरमीडिएट के बाद सिविल सेवा की तैयारी
प्रारम्भ कराने वाला भारत का प्रथम संस्थान.....

3 वर्षीय एकीकृत
पाठ्यक्रम/फांउडेशन कोर्स
(For 12th Passed Students)

PRACTICE IS THE KEY TO SUCCESS
प्रीलिम्स/मेन्स टेस्ट सीरीज
English/Hindi Medium | Online & Offline

Key Features

- Focus on personality development
- Performance evaluation and feedback
- Personalized mentorship and guidance
- Current affairs classes and monthly test
- Conducting Seminar, debates, essay & other activities

HEARTIEST
CONGRATULATIONS..!!
to all the selected candidates of
IAS & PCS

मेंटरशिप प्रोग्राम

- मेन्स PYQs
- Focus on Answer writing skill
- Current Affairs

Special Mentorship Programme for Mains Examination

Online Live Classes through **RACE Mobile App**

Our Centers

Aliganj	Indira Nagar	Alambagh	Ashok Nagar
Lucknow (U.P.)	Lucknow (U.P.)	Lucknow (U.P.)	Kanpur (U.P.)
Mob.: 7388114444	Mob.: 9044137462	Mob.: 8917851448	Mob.: 9044327779

ADD.: A.G. Tower, Opp. Universal Book Centre, Kapoorthala, Aliganj, Lucknow-226024 (U.P.)

Join our Telegram Channel raceiaslucknow | Follow us on : | Website : www.raceias.com